

**Note: All the Book Chapters
Claimed under the Metric 3.3.2
have been published in the year
2023**

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर : जीवन और संघर्ष

Note: All the book chapters claimed under this metric have been published in 2023



Book Chapter As
Per UGC Guideline

सम्पादक : प्रहलाद सिंह अहलूवालिया



Scanned with OKEN Scanner

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर : जीवन और संघर्ष

सम्पादक : प्रहलाद सिंह अहलूवालिया

प्रकाशक :- शोध प्रकाशन

प्रकाशक का पता :- हिसार(हरियाणा)

ISBN : 978-81-19110-33-9

प्रिंटर :- खालसा प्रिंटर

संस्करण :- प्रथम (2023)

कॉपीराइट :- शोध प्रकाशन, हिसार

(लेख में दिए विचार लेखकों के अपने विचार हैं। इसके लिए प्रकाशक या सम्पादक जिम्मेदार नहीं है। विवाद के क्षेत्र में न्याय क्षेत्र हिसार, हरियाणा होगा।)

7.	डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर जी का जीवन में संघर्ष व 18 मार्च 1956 को भाषण में कहा पूछे पढ़े लिखे लोगों ने धोखा दिया की समीक्षा	90-95
	डॉ. सतीश चौहान	
8.	बाबा साहेब डॉ. आम्बेडकर : जीवन और संघर्ष	96-101
	शैलेश कुमार	
9.	बाबा साहेब का जीवन और संघर्ष	102-104
	डॉ. आशा लता नायडू	
10.	बाबा साहब अम्बेडकर के जीवन संघर्ष और वैचारिकी	105-111
	डॉ. श्वेता शरण	
11.	संविधान शिल्पी - बाबा साहब	112-125
	नन्द लाल मणि त्रिपाठी पीताम्बर	
12.	डॉ. भीमराव आम्बेडकर : एक दार्शनिक	126-138
	प्रहलाद सिंह अहलूवालिया	
13.	भारतीय वर्णव्यवस्था और अम्बेडकर का चिन्तन	139-147
	परिमल मण्डल	
14.	बुद्ध शिक्षा र अम्बेडकरवाद	148-161
	कमला हेमचुरी	
15.	डॉक्टर बाबा भीमराव अम्बेडकर, उनका जीवन संघर्ष	162-167
	कुन्ती हरिराम झांसी	

भारतीय वर्णव्यवस्था और अम्बेडकर का चिन्तन

परिमल मण्डल, सहायक अध्यापक, संस्कृत विभाग

स्वर्णमयी योगेन्द्रनाथ महाविद्यालय

नन्दीग्राम, पूर्व मेदिनीपुर

"Bharatiya Barnabyabostha aur Ambedkar ka Chintan", Parimal Mandal,
Assistant Professor, Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya,
nandigram, Purba Medinipur

भूमिका

भारतीय प्राचीन परम्परा में वर्णाश्रम व्यवस्था का अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रहा है। यह लौकिक जीवन से ऊपर उठकर पारलौकिक जीवन को अधिक महत्व प्रदान करता है। वर्णाश्रम दो शब्दों से मिलकर बना है वर्ण तथा आश्रम। इनमें से वर्ण को सामाजिक व्यवस्था, समृद्धि और सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए समाज को कार्यात्मक रूप से चार स्तरों में वर्गीकृत किया। वे चार वर्ण हैं- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। जबकि आश्रम व्यवस्था में व्यक्ति के जीवन को चार भागों में वर्गीकृत संबंधित धारणा है। इसमें मनुष्यों के व्यक्तिगत जीवन को समुन्नत करने के लिये सम्पूर्ण जीवन यात्रा के चार स्तरों (आश्रमों) में विभाजित कर दिया गया है। वे चार आश्रम हैं- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, और सन्यास। प्राचीन सनातन ऋषियों ने वर्ण व्यवस्था का विधान इसलिये दिया है जिससे समाज के प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने निर्दिष्ट कर्तव्यों का पालन करते हुए आपसी मतभेदों एवं वैमनस्य से मुक्त होकर अपना तथा समाज का पूर्ण विकास में सहयोग दे सके। यह सामूहिक पद्धति से व्यक्ति के उन्नति की योजना है जो भारतीय समाज की निजी व्यवस्था है। इसके द्वारा समाज में रहते हुए व्यक्ति परिवार, समुदाय, समाज तथा

साहित्य, समाज और संस्कार



डॉ. परिमल मण्डल



Scanned with OKEN Scanner

साहित्य, समाज और संस्कार

सम्पादक : डॉ. परिमल मण्डल

प्रकाशक :- शोध प्रकाशन

प्रकाशक का पता :- हिसार(हरियाणा)

ISBN :- 978-81-19110-16-2

प्रिंटर :- खालसा प्रिंटर

संस्करण :- प्रथम (2023)

कॉपीराइट :- शोध प्रकाशन, हिसार

(लेख में दिए विचार लेखकों के अपने विचार हैं। इसके लिए प्रकाशक या सम्पादक जिम्मेदार नहीं है। विवाद के क्षेत्र में न्याय क्षेत्र हिसार, हरियाणा होगा।)

अनुक्रमणिका

क्र सं	अध्याय	पृष्ठ
	अनुक्रमणिका	iii
1.	प्राचीन भारतीय संस्कार और आधुनिक समाज डॉ. परिमल मण्डल	1-19
2.	साहित्य और समाज का सम्बन्ध : एक अवलोकन प्रहलाद सिंह अहलूवालिया	20-26
3.	डॉ. एम. डी. इंगोले द्वारा लिखित (आत्मकथा) 'यादों के झरोखे से' : एक अध्यायन -डॉ. आमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ	27-34
4.	सामाजिक संस्कार विषय रत्नसागरम्-श्रीमद्रामायणम् डॉ. सि. हेच्. पवन् कुमारः	35-48
5.	साहित्य, समाज और संस्कार बनवारी शर्मा रुह	49-53
6.	उपनिषद्कालीन शिक्षार वर्तमान प्रासंगिकता पापिया गंडाई	54-65
7.	रामायणे नावीन्य अधिकार श्रवनिधि बांक	66-72
8.	हरिऔध की साहित्य साधना का स्वरूप प्रसादराव जामि	73-77
9.	साहित्य, समाज और संस्कार: आधुनिक संदर्भ में	78-87

प्राचीन भारतीय संस्कार और आधुनिक समाज

डॉ. परिमल मण्डल, सहायक अध्यापक, संस्कृत विभाग
स्वर्णमयी योगेन्द्रनाथ महाविद्यालय, नन्दीग्राम, पूर्व मेदिनीपुर

**Prachin bharatiya sanskar aur Aadhunik Samaj, Dr. Parimal Mandal, Asst. Prof.,
Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya, Nandigram**

परिचय-

संस्कार शब्द 'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से 'घञ्' प्रत्यय होकर 'सम्परिध्यां करोतौ भूषणे' सूत्र से सुट् का आगम होकर बनता है। इसका प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। जैसे डॉ. राजबली पाण्ड्ये ने अपनी पुस्तक हिन्दी संस्कार नामक ग्रन्थ में संस्कार शब्द के अर्थ बताते हैं। उनके मते संस्कार के अर्थ प्रयोग शिक्षा, संस्कृति प्रशिक्षण, सौजन्य, पूर्णता, व्याकरण सम्बन्धी शुद्धि, संस्करण, परिष्करण, शोभा, आभूषण, प्रभाव, स्वरूप, स्वभाव-क्रिया, स्मरण शक्ति पर पड़नेवाला प्रभाव आदि¹ है। संस्कृत साहित्य के महान कवि कालिदास कुमारसम्भवम् महाकाव्य में संस्कार शब्द को शुद्धि अर्थ में प्रयोग किया है। यथा-

“संस्कारवत्येव गिरा मनीषी तथा स पूतश्च विभूषितश्च²”।

अभिज्ञानशकुन्तलम् नाटकमें संस्कार शब्द को आभूषण अर्थ में प्रयोग किया गया है। यथा-

“स्वभाव सुन्दरं वस्तु न संस्कारमपेक्षते³”।

हितोपदेश में संस्कार को छाप अर्थ में प्रयोग मिलता है-

“यन्नेव भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्⁴”।

¹ हिन्दु संस्कार, डॉ. राजबली पाण्ड्ये, पृष्ठ. 18

² कुमारसम्भवम् 1/28

³ अभिज्ञानशकुन्तलम् 7/33

⁴ हितोपदेश 1/8

मीमांसा दर्शन में यज्ञाङ्गभूत पुरोडाश आदि की विधिवत् शुद्धि से इसका आशय समझाते हैं⁵। अद्वैतवेदान्ती जीव पर शारीरिक क्रियाओं के मिथ्या आरोप को संस्कार मानते हैं⁶। मनुस्मृतिकार ने-

“कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च⁷”।

अर्थात् शरीर के पवित्र बनाने के लिए धार्मिक अनुष्ठान की विधि को हि संस्कार कहा है। महर्षि चरक के अनुसार संस्कार पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनकी जगह सद्गुणों का आधान कर देने का नाम है। इसप्रकार से और भी अनेक अर्थ मिलते हैं।

संस्कारों की संख्या-

संस्कारों की प्रारम्भ वैदिक काल से पहले ही हो चुका था, जैसा कि वेदों के विविध कर्मकाण्ड से ज्ञात होता है। लेकिन वैदिक साहित्य में पृथक् रूप से संस्कार शब्द के उल्लेख नहीं मिलते हैं। सबसे पहले गृह्यसूत्र में संस्कारों का वर्णन मिलते हैं। उसके बाद धर्मसूत्रों में संस्कारों का वर्णन मिलता है। संस्कार कितने प्रकार के इसमें भी विभिन्न ग्रन्थों प्रयोजनानुसार संस्कार के संख्या बताये हैं। जैसे गौतम धर्मसूत्र में अष्ट आत्मगुणों के साथ 40 संस्कारों के सूची दी गई है। मनुस्मृति में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त 13 संस्कारों के सूची दिया है⁸। याज्ञवल्क्यस्मृति में मनु के केशान्त संस्कारों को छोड़कर बाकि संस्कारों को गिनाया है। पुराणों भी विविध संस्कारों का उल्लेख है, किन्तु महर्षि व्यास प्रणीत व्यासस्मृति में वर्णित 16 संस्कार हैं⁹। राजबली पाण्ड्ये अपने पुस्तक हिन्दु संस्कार नामक ग्रन्थ में 16 संस्कार के वर्णन करते हैं। वे महत्वपूर्ण सोलह संस्कार हैं-

⁵ प्रेक्षणादिजन्यसंस्कारो यज्ञाङ्गपुरोडाशेष्विति द्रव्यधर्मः, वाचस्पत्य बृहदभिधान, 5, पृष्ठ- 4188

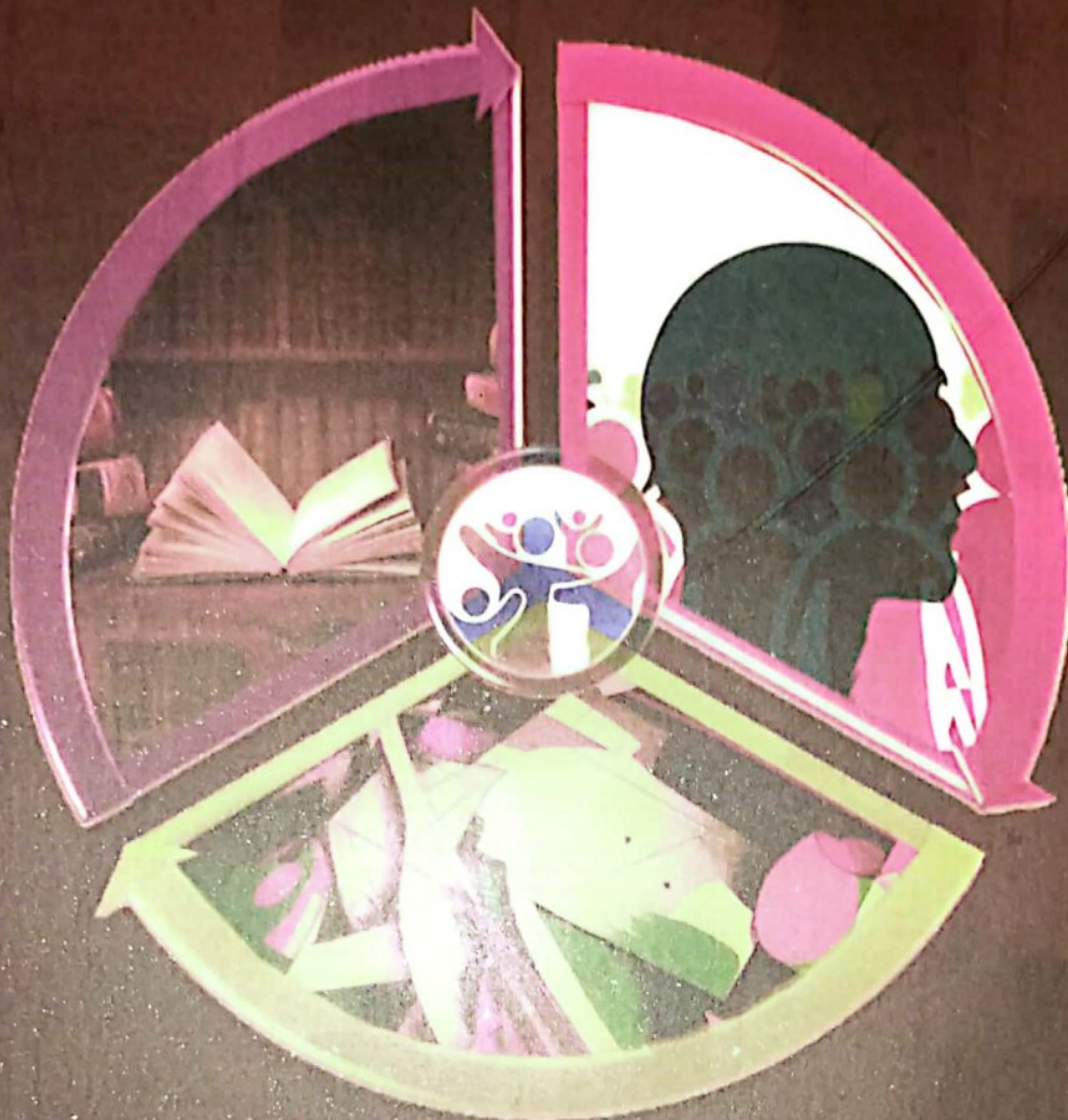
⁶ स्नानाचमनादिजन्याः संस्कारा देहे उत्पाद्यमानानि तदभिधानानि जीवे कल्प्यन्ते, वाचस्पत्य बृहदभिधान, 5, पृष्ठ- 4188

⁷ मनुस्मृति 2/27

⁸ मनुस्मृति 2/15, 2/28, 29, 31, 32, 3/1,2,3

⁹ गर्भाधानं पुंसवनं सीमंतो जातकर्म च। नामक्रियानिष्क्रमणेअन्नाशनं वपनक्रियाः॥ कर्णवेधो व्रतादेशो वेदारंभक्रियाविधिः। केशान्त स्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः॥ त्रेताग्निसंग्रहश्चेति संस्काराः षोडश स्मृताः। (व्यासस्मृति 1/13-15)

ଆଶିଷ୍ଟି, ଅମାଞ୍ଜ ଓ ଅଂସ୍କୃତି



ଅମ୍ପାଦନା
ପରିମଳ ମନ୍ଦଳ
ରଞ୍ଜନ ମାହାନ୍ତି

Sahitya, Samaj O Sanskriti

Edited by

Parimal Mandal

&

Ranjan Mahata

প্রথম প্রকাশ: জুন, ২০২৩

© কগনিশ্ন পাবলিকেশনস্

প্রকাশক

অরেন্স মহালদার

কগনিশ্ন পাবলিকেশনস্ (Cognition Publications)

পশ্চিম সপ্তগ্রাম, বিশরপাড়া, বিরাটি, কলিকাতা-৭০০০৫১

<http://cognitionpublications.com/>

E.Mail: cognitionpublications@gmail.com

ফোন: +৯১ ৭০৪৪৭৭২৩৯২

ISBN : 978-93-92205-32-3

মুদ্রক: এস পি কমিউনিকেশনস্ প্রাঃ লিঃ, কলিকাতা-৭০০০০৯

প্রচ্ছদচিত্রঃ সৈকত মজুমদার

মূল্য: ৪৭৫ টাকা

একাদশ অধ্যায়: শ্রীমদ্ভগবদগীতোক্ত ভক্তিযোগ ও বর্তমান সময়ে তার প্রাসঙ্গিকতা
একটি পাঠবিমর্শ
শ্রীরামস্বরূপ মুখার্জী পৃষ্ঠা ১০৭

দ্বাদশ অধ্যায়: মূল্যবোধের অবক্ষয় ও নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায়ের কয়েকটি ছোটগল্প
মধুমিতা বসু পৃষ্ঠা ১১০

ত্রয়োদশ অধ্যায়: মহাশ্বেতা দেবীর ছোটগল্পে পশ্চিম রাঢ়ের গ্রাম জীবন
দীপঙ্কর সরকার পৃষ্ঠা ১২০

চতুর্দশ অধ্যায়: উপজাতিদের মধ্যে সামাজিক বিচলন — প্রসঙ্গ পশ্চিমবঙ্গ
দেবাশীষ সরকার পৃষ্ঠা ১৩০

পঞ্চদশ অধ্যায়: ভারতীয় উপজাতীদের স্বাস্থ্য এবং স্বাস্থ্যসংক্রান্ত বিশ্বাস: এক
সাহিত্য পর্যালোচনা
সঞ্জিত দেবনাথ পৃষ্ঠা ১৪০

ষষ্ঠদশ অধ্যায়: বিশ্বায়নের কালে সাহিত্য পড়া ও পড়ানো
দূর্বা বসু পৃষ্ঠা ১৫০

সপ্তদশ অধ্যায়: বাণেশ্বর বিদ্যালঙ্কারের সারস্বত অবদান
প্রদীপ কুমার মহাপাত্র পৃষ্ঠা ১৫০

অষ্টাদশ অধ্যায়: সায়ণাচার্যের বেদব্যাখ্যা পদ্ধতি: একটি সংক্ষিপ্ত আলোচনা
মানবেন্দু সরকার পৃষ্ঠা ১৬০

উনবিংশ অধ্যায়: মৃচ্ছকটিকে বৈদিকতত্ত্বানুসন্ধান: একটি সমীক্ষা
মধুমিতা ঘোষ পৃষ্ঠা ১৭০

বিংশ অধ্যায়: সলিমুল্লাহ খানের 'উৎসর্গ: পরিবার প্রজাতি রাষ্ট্র'
মুহাম্মদ ইসহাক পৃষ্ঠা ১৮০

একবিংশ অধ্যায়: পুঁথি বিশারদ অক্ষয়কুমার কয়াল
দীপঙ্কর নস্কর পৃষ্ঠা ১৮০

মহাশ্বেতা দেবীর ছোটগল্পে পশ্চিম রাঢ়ের গ্রাম জীবন দীপঙ্কর সরকার

মহাশ্বেতা দেবীর ছোট গল্পগুলি নির্ণায়ক সাথে সাভিনিবেষচিত্তে পাঠ করলে বোঝা যায় যে তার মধ্যে দিয়ে গ্রাম বাংলার সামগ্রিক গরন এবং চালচিত্রটি একদম বাস্তব ভঙ্গিতে মূর্ত হয়ে উঠেছে। প্রায় সমগ্র রাঢ়বঙ্গের অসহায় দরিদ্র নিম্নবিত্ত নিম্নবর্গ আদিবাসীর অত্যাচারিত শোষিত ও বঞ্চিত হওয়ার বাস্তব চিত্র গুলি মহাশ্বেতা দেবী ছোটগল্পে নৈপুণ্যের সাথে অঙ্কিত হয়েছে। স্বাধীনতা লাভের বহুদিন পরে ও অসংখ্য মানুষ যে অন্যহীন গৃহহীন হয়ে মৃত্যুর কোলে ঢলে পড়েছিল গল্পগুলি তারি সাক্ষ্য বহন করে। যোথদার, বর্গাদার ও মহাজনী প্রথা কি ভীষণ দুষ্ট ক্ষতের মতো গ্রাম বাংলার কৃষি মজুরদের তিলে তিলে মৃত্যুর দিকে ফেলে দিচ্ছিল আলোচ্য লেখিকার গল্পে তা স্পষ্টরূপে প্রকাশিত হয়েছে। তাছাড়া পশ্চিম পূর্ব রাঢ়বঙ্গ এবং দক্ষিণ লড়াই, সংস্কৃতি, আচার বিশ্বাস, জীবন-জীবিকা ধর্মীয় বিশ্বাস, ব্যবহৃত মুখের ভাষা চালচলন সমস্ত কিছুই তাঁর গল্পে অত্যন্ত প্রাণবন্ত হয়ে উঠেছে। সংগত কারণে মহাশ্বেতা দেবী ছোটগল্পে এক একটি দিক ধরে ধরে রারের গ্রাম বাংলার জীবন যাপন এবং জীবন সংগ্রাম আলোচিত হলো¹। মহাশ্বেতাদেবীর লেখা "বিছন", "মাহাদু একটি রূপকথা", এবং "দ্রৌপদী", "হুলমাহার মা", "নুন", "সংরক্ষণ", "শিশু", "মৌল অধিকার ও ভিখারি দুষাধ", "ফারাকাঠি", প্রভৃতি গল্পে পশ্চিম মেদিনীপুর, ঝারগ্রাম, বাঁকুড়া, পুরুলিয়া বীরভূম পশ্চিম বর্ধমান এবং ওড়িশা ঝাড়খণ্ডের সীমানাবর্তী সিংহম মালভূম ধলভূম ইত্যাদি এলাকার গ্রাম জীবন নিখুঁত ভাবে অঙ্কিত হয়েছে। সুদূর অতীত অনার্য কাল থেকে বর্তমান পশ্চিমরাঢ়ের অঞ্চলের অনুর্বর পার্বত্য মালভূমি এলাকা কিংবা অরণ্যে আদিবাসী উপজাতিদের বাসস্থান গড়ে উঠেছে। সাঁওতাল, কোল, ভিল, মুন্ডা, কোরকু, খেড়িয়া, লোধা, শবর, লোহার, ভান্ডা, আগারাইয়া, জাতি অন্তর্গত নিম্নবর্গের মানুষের প্রকৃতি ও উচ্চবর্গীয়দের বিরুদ্ধে অদম্য জীবন সংগ্রাম উল্লেখিত গল্পগুলিতে অত্যন্ত নিপুণতা ও বিশ্বস্ততার সাথে বর্ণিত হয়েছে। সভ্যতার আপাত অগ্রগতি কি ভীষণ নির্মমভাবে অগোচরে অজ্ঞাতসারে উপরোক্ত লুপ্তপ্রায় আদিম জাতিকে সমূলে ধ্বংসের দিকে

¹ 'নিম্নবর্গ আর আদিবাসী মহাদেশ মহাশ্বেতা দেবীর অনুভাবনায়', মানবেন্দ্র মুখোপাধ্যায়।
পৃষ্ঠা ১৭৬-

সাহিত্যের বিভিন্ন বিষয়কে কেন্দ্র করে প্রবন্ধ রচনায় সিদ্ধহস্ত এবং প্রবন্ধগুলি বিভিন্ন জার্নাল ও গ্রন্থে প্রকাশিত। নিম্নবর্ণিত বিশেষ করে আদিবাসী ও দলিত জনজীবন, সংখ্যালঘু ও উদ্বাস্তু মানুষের অধিকার বিষয়ে গবেষণা ও সামাজিক কার্যক্রমের সঙ্গে যুক্ত।

ড. মুহাম্মদ ইসহাক

প্রবন্ধ: সলিমুল্লাহ খানের উৎসর্গ: পরিবার প্রজাতি রাষ্ট্র

মুহাম্মদ ইসহাক বাংলাদেশের চট্টগ্রাম বিশ্ববিদ্যালয়ে রাজনীতি বিজ্ঞান বিভাগের একজন সহকারী অধ্যাপক। তিনি একাধারে শিক্ষক, গবেষক, প্রাবন্ধিক ও সাহিত্য সমালোচক। আন্তর্জাতিক রাজনীতি, বাংলাদেশের সাথে ভারতের সম্পর্ক, বাংলাদেশের সাথে চীন ও মার্কিন যুক্তরাষ্ট্রের সম্পর্ক, ছিটমহল, নারী ও রাজনীতি, ভূ-রাজনীতি, স্থানীয় ইতিহাস ও রোহিঙ্গা ইস্যু তাঁর আগ্রহের বিষয়।

তাপস দাস

প্রবন্ধ: বিবাহ- নারীর স্বতন্ত্র সত্তার পরিপন্থী

তাপস দাস বর্তমানে শহীদ নুরুল ইসলাম মহাবিদ্যালয়ের দর্শন বিভাগের সহকারী অধ্যাপক হিসাবে কর্মরত। ২০১১ সালে তিনি পশ্চিমবঙ্গ রাষ্ট্রীয় বিশ্ববিদ্যালয়ের অধিনস্ত মহাদেবানন্দ মহাবিদ্যালয় হতে দর্শনে স্নাতক ডিগ্রী লাভ করেন। ২০১৩ সালে তিনি পশ্চিমবঙ্গ রাষ্ট্রীয় বিশ্ববিদ্যালয় থেকে দর্শন শাস্ত্রে স্নাতকোত্তর ডিগ্রী লাভ করেন এবং পরবর্তীতে ২০১৭ সালে ওই বিশ্ববিদ্যালয় হইতে তিনি এম.ফিল ডিগ্রী লাভ করেন। ইতিমধ্যেই তার বেশ কিছু লেখা বিভিন্ন গ্রন্থে অধ্যায় হিসাবে প্রকাশিত হয়েছে। বর্তমানে তিনি অধ্যাপনের পাশাপাশি পশ্চিমবঙ্গ রাষ্ট্রীয় বিশ্ববিদ্যালয়ে দর্শন বিভাগের একজন গবেষক, তাঁর গবেষণার বিষয়টি হল বাউল দর্শন।

দীপঙ্কর সরকার

প্রবন্ধ: মহাশ্বেতা দেবীর ছোট গল্পে পশ্চিম রাঢ়ের গ্রাম জীবন

তিনি যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়ে ২০০৪ থেকে ২০১৩ এর বাংলা বিভাগ থেকে স্নাতক ও স্নাতকোত্তর ডিগ্রী অর্জন করেছেন। পরবর্তীকালে তিনি সেই বিশ্ববিদ্যালয় বিএড

ডীগ্রি অর্জন করেছেন। বর্তমানে বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয়ের অধীনস্থ স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়ে বাংলা বিভাগে সহকারি অধ্যাপক হিসাবে কর্মরত। তাঁর গবেষণার বিষয় মহাশ্বেতা দেবীর ছোটগল্পে গ্রামবাংলার জনজীবন। এছাড়াও দলিত সাহিত্য মতুয়া সাহিত্য বিষয়ে তাঁর বিশেষ আগ্রহ ও অনুসন্ধিৎসা রয়েছে। ইতিমধ্যে তাঁর কিছু লেখা বিভিন্ন পত্র-পত্রিকায় প্রকাশিত হয়েছে।

দীপঙ্কর নস্কর

প্রবন্ধ: পুঁথি বিশারদ অক্ষয়কুমার কয়াল

দীপঙ্কর নস্কর, সহকারী অধ্যাপক, ইতিহাস বিভাগ, বিধানচন্দ্র কলেজ, আসানসোল। আঞ্চলিক ইতিহাস গবেষক, ক্ষেত্র সমীক্ষক, গাঙ্গেয় জনপদের লোকসংস্কৃতি চর্চায় দীর্ঘ দু দশক ধরে গবেষণায়রত। তার লেখা বিভিন্ন প্রবন্ধ আন্তর্জাতিক এবং জাতীয় স্তরের পত্রপত্রিকায় সমাদৃত। তার লিখিত ও সম্পাদিত বইগুলি হল- ১. নারীর কণ্ঠস্বর ও নারীর জীবন, Women's Voices- Women's Lives, ২. দক্ষিণ চব্বিশ পরগনার ইতিহাস চর্চা (১ম খণ্ড), ৩. গ্রাম নামে দক্ষিণ ২৪ পরগনা, ৪. দক্ষিণ ২৪ পরগনার বাড়ির দুর্গা, ৫. বিস্ময়ে ভরা সুন্দরবন ইত্যাদি।

ড. দূর্বা বসু

প্রবন্ধ: বিশ্বায়নের কালে সাহিত্য পড়া ও পড়ানো

দূর্বা বসু বেথুন কলেজ থেকে ইংরেজিতে স্নাতক, যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয় থেকে ইংরেজিতে স্নাতকোত্তর, এবং নিউ ইয়র্ক বিশ্ববিদ্যালয় থেকে পিএইচডি। ঔপনিবেশিক বাংলার ভাষাগত কিছু বিষয় নিয়ে পিএইচডি-র গবেষণা। সেই সূত্রেই তাঁর গবেষণার ক্ষেত্র হলো উত্তরঔপনিবেশিক সাহিত্য ও সংস্কৃতি (postcolonial literatures and cultures), মুদ্রিত পুস্তকের ইতিহাস (history of the book), আধুনিকতা (modernisms and modernities), অনুবাদ ও অনুবাদতত্ত্ব (translation), ফটোগ্রাফি, বিশেষত দক্ষিণ এশিয়া কেন্দ্র করে। সাতটি ভাষা চর্চা করেছেন এবং অনুবাদ করে থাকেন। যাদবপুর ইউনিভার্সিটি প্রেস থেকে সৈয়দ মুজতবা আলীর ছোটগল্পের ইংরেজি অনুবাদের সংকলনে তাঁর একটি গল্পের অনুবাদ প্রকাশিতব্য। যারা পরিযায়ী পত্রিকায় তাঁর ফটোগ্রাফ ও লেখা প্রকাশিত হয়েছে, এ ছাড়াও The Telegraph-এর জন্য তিনি গ্রন্থ সমালোচনা করেছেন। বর্তমানে postcolonial pedagogy সম্পর্কে লেখালিখি করছেন।

ଆଶିଷ, ଅମାଞ୍ଜ ଓ ଅନୁକୃତି



ଅମ୍ପାଦନା
ପରିମଳ ମଣ୍ଡଳ
ରଞ୍ଜନ ମାହାନ୍ତି

Sahitya, Samaj O Sanskriti

Edited by

Parimal Mandal

&

Ranjan Mahata

প্রথম প্রকাশ: জুন, ২০২৩

© কগনিশ্বন পাবলিকেশনস্

প্রকাশক

অরেন্স মহালদার

কগনিশ্বন পাবলিকেশনস্ (Cognition Publications)

পশ্চিম সপ্তগ্রাম, বিশরপাড়া, বিরাটি, কলিকাতা-৭০০০৫১

<http://cognitionpublications.com/>

E.Mail: cognitionpublications@gmail.com

ফোন: +৯১ ৭০৪৪৭৭২৩৯২

ISBN : 978-93-92205-32-3

মুদ্রক: এস পি কমিউনিকেশনস্ প্রাঃ লিঃ, কলিকাতা-৭০০০০৯

প্রচ্ছদচিত্রঃ সৈকত মজুমদার

মূল্য: ৪৭৫ টাকা

একাদশ অধ্যায়: শ্রীমদ্ভগবদগীতাক্ত ভক্তিযোগ ও বর্তমান সময়ে তার প্রাসঙ্গিকতা
একটি পাঠবিমর্শ
শ্রীরামস্বরূপ মুখার্জী পৃষ্ঠা ১০

দ্বাদশ অধ্যায়: মূল্যবোধের অবক্ষয় ও নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায়ের কয়েকটি ছোটগল্প
মধুমিতা বসু পৃষ্ঠা ১১

ত্রয়োদশ অধ্যায়: মহাশ্বেতা দেবীর ছোটগল্পে পশ্চিম রাঢ়ের গ্রাম জীবন
দীপঙ্কর সরকার পৃষ্ঠা ১২

চতুর্দশ অধ্যায়: উপজাতিদের মধ্যে সামাজিক বিচলন — প্রসঙ্গ পশ্চিমবঙ্গ
দেবাশীষ সরকার পৃষ্ঠা ১৩

পঞ্চদশ অধ্যায়: ভারতীয় উপজাতীদের স্বাস্থ্য এবং স্বাস্থ্যসংক্রান্ত বিশ্বাস: এক
সাহিত্য পর্যালোচনা
সঞ্জিত দেবনাথ পৃষ্ঠা ১৪

ষষ্ঠদশ অধ্যায়: বিশ্বায়নের কালে সাহিত্য পড়া ও পড়ানো
দূর্বা বসু পৃষ্ঠা ১৫

সপ্তদশ অধ্যায়: বাণেশ্বর বিদ্যালঙ্কারের সারস্বত অবদান
প্রদীপ কুমার মহাপাত্র পৃষ্ঠা ১৫৫

অষ্টাদশ অধ্যায়: সায়ণাচার্যের বেদব্যাক্ষ্য পদ্ধতি: একটি সংক্ষিপ্ত আলোচনা
মানবেন্দু সরকার পৃষ্ঠা ১৬৫

উনবিংশ অধ্যায়: মৃচ্ছকটিকে বৈদিকতত্ত্বানুসন্ধান: একটি সমীক্ষা
মধুমিতা ঘোষ পৃষ্ঠা ১৭২

বিংশ অধ্যায়: সলিমুল্লাহ খানের 'উৎসর্গ: পরিবার প্রজাতি রাষ্ট্র'
মুহাম্মদ ইসহাক পৃষ্ঠা ১৮৫

একবিংশ অধ্যায়: পুঁথি বিশারদ অক্ষয়কুমার কয়াল
দীপঙ্কর নস্কর পৃষ্ঠা ১৮৯

মূল্যবোধের অবক্ষয় ও নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায়ের কয়েকটি ছোটগল্প

মধুমিতা বসু

সারসংক্ষেপ: মূল্যবোধের অবক্ষয় একটি সামাজিক সংকেত। ধর্মগত, জাতিগত ভেদের উপর ভিত্তি করে আমাদের সমাজে গড়ে উঠেছে নানা রকম শ্রেণীবিন্যাস। তাছাড়া অর্থের মানদণ্ডে সমাজে তৈরী হয়েছে ধনী-দরিদ্রের ব্যবধান। নীতিগত শিক্ষার উপর ভিত্তি করেই নৈতিক চরিত্র গঠিত হয়। আর এই শিক্ষা শুরু হয় শিশু বয়স থেকেই। কিন্তু ক্ষমতালোভ, অর্থলোভ, যশ প্রাপ্তি ইত্যাদির প্রবল বাসনা মানুষকে ক্রমান্বয়ে আত্মকেন্দ্রিক করে তোলে। স্বার্থসিদ্ধির প্রবল বাসনা যতই বাড়তে থাকে ততই মন থেকে হারিয়ে যায় নৈতিকতাবোধ। এমনকী নিকটতম সম্পর্কগুলো ক্রমশ মূল্যহীন হয়ে যায়, সহজাত হৃদয়বৃত্তিগুলি হারিয়ে মানুষের মধ্যে পারস্পরিক বৃত্তি জাগ্রত হয়। সাহিত্য যেহেতু সমাজের দর্পণ, তাই সাহিত্যের মধ্য দিয়ে সমাজের এই চেহারার প্রতিকলন ঘটেছে নানাভাবে। এই প্রসঙ্গেই নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায়ের কয়েকটি ছোটগল্পের কথা মনে পড়ে যায়। দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধের প্রভাবে ভারতের আর্থ-সামাজিক জীবনে যে সংকেটময় পরিস্থিতির সৃষ্টি হয়েছিল, তার হাত থেকে বাঁচতে পারেনি বাঙালি সমাজও। দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধের অনিবার্য ফলশ্রুতি হল দুর্ভিক্ষ, মল্লস্তর। দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধোত্তর কালে সংকেটময় পরিস্থিতিতে অর্থনৈতিক বিপর্যয়ের পাশাপাশি সামাজিক মূল্যবোধও ক্ষয়প্রাপ্ত হয়েছিল। কিছু সুবিধাভোগী, বিত্তবান, অর্থলিপ্সু, ক্ষমতালোভী আত্মকেন্দ্রিক মানুষ অধিকতর অর্থের লোভে বিপর্যস্ত পরিস্থিতির সুযোগ নিয়ে শুভবোধ, শুভচিন্তাকে জলাঞ্জলি দিয়ে অনৈতিক কর্মে লিপ্ত হয়েছিল। দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধ, ধনতান্ত্রিক সভ্যতার প্রসারে মানুষের মন থেকে মানবিক মূল্যবোধ কীভাবে হারিয়ে যেতে শুরু করেছিল তার বাস্তব চিত্র নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায়ের কয়েকটি ছোটগল্পের আলোচনার মাধ্যমে তুলে ধরা-ই এই প্রবন্ধের উদ্দেশ্য।

মূল শব্দ: মূল্যবোধের অবক্ষয়, নৈতিকতাবোধ, মানবিকতা, দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধ, আর্থিক সংকেত।

সাহিত্য সমাজের-ই প্রতিকলন। সাহিত্যে সমাজের ভালো-মন্দ নানাদিক প্রতিকলিত হয়। সমাজকেন্দ্রিক সাহিত্যে কল্পিত চরিত্র ও ঘটনার মধ্য দিয়ে সাহিত্যিক সমাজের বাস্তব চেহারার সঙ্গে পাঠকের পরিচয় ঘটান। সমাজের অসঙ্গতি ও ক্রটিপূর্ণ দিকগুলো সাহিত্যে তুলে ধরে সাহিত্যকে যেমন সমাজ পরিবর্তন, চারিত্রিক শুদ্ধি লাভের হাতিয়ার হিসেবে ব্যবহার করেন তেমনি সমাজের বিভিন্ন আচার, সংস্কার ও সংস্কৃতি সম্পর্কে অবহিতও করেন। সমাজ যেহেতু পরিবর্তনশীল, তাই সমাজকেন্দ্রিক সাহিত্য কোনো বিশেষ সময়পর্বের আর্থ-সামাজিক পরিস্থিতির ঐতিহাসিক দলিল হিসাবেও পরিগণিত হয়। তাছাড়া সমাজ অবলম্বনে রচিত সাহিত্যে সমাজ সম্পর্কে লেখকের মনোভাবও স্পষ্ট হয়।

আদর্শে কোচবিহারের রাসমেলা' শিরোনামে লেখাটি দ্রুত গ্রন্থে প্রকাশিত হবে।
বর্তমানে বাংলা উপন্যাসে নিম্নবর্গের অবস্থান বিষয়ে লেখালেখি চলছে।

ড. প্রদীপ কুমার মহাপাত্র

প্রবন্ধ: বাণেশ্বর বিদ্যালয়কারের সারস্বত অবদান

প্রদীপ কুমার মহাপাত্র বর্তমানে তিনি রাজা প্যারি মোহন কলেজে সংস্কৃত বিভাগের সহকারী অধ্যাপক রূপে কর্মরত। তিনি রবীন্দ্রভারতী বিশ্ববিদ্যালয় থেকে স্নাতকোত্তর এবং পিএচডি উপাধি লাভ করেন। তাঁর গবেষণার বিষয়, বৈদিক সাহিত্য, পাণ্ডুলিপি চর্চা, ব্যাকরণ। ইতিমধ্যে তার লেখা বিভিন্ন প্রবন্ধ আন্তর্জাতিক এবং জাতীয় স্তরের পত্রপত্রিকায় সমাদৃত।

মধুমিতা ঘোষ

প্রবন্ধ: মৃচ্ছকটিকে বৈদিকতত্ত্বানুসন্ধান একটি সমীক্ষা

মধুমিতা ঘোষ, বর্তমানে তিনি অনুর হাইস্কুলে অতিথি শিক্ষকরূপে কর্মরত। তিনি রামকৃষ্ণ শারদা বিদ্যা মহাপীঠ, কামারপুকুর থেকে সংস্কৃত বিষয় স্নাতক, বর্তমান বিশ্ববিদ্যালয় থেকে সংস্কৃতে স্নাতকোত্তর। তিনি UGC NET, WB SET বিভিন্ন প্রতিযোগিতামূলক পরীক্ষায় উত্তীর্ণ করেছেন। বর্তমানে তিনি বিভিন্ন গবেষণামূলক পত্রপত্রিকায় এবং পুস্তকে লেখালেখি করছেন। তাঁর গবেষণামূলক কাজের পরিধির মধ্যে রয়েছে ভারতীয় দর্শন, কাব্য, পাণ্ডুলিপি।

মধুমিতা বসু

প্রবন্ধ: মূল্যবোধের অবক্ষয় ও নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায়ের কয়েকটি ছোট গল্প

ড. মধুমিতা বসু বর্তমানে বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয়ের অধীনস্থ স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়ে বাংলা বিভাগে সহকারী অধ্যাপিকা হিসাবে কর্মরত। তিনি কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের অধীনস্থ নরসিংহ দত্ত কলেজ থেকে বাংলাতে স্নাতক (সাম্মানিক) ডিগ্রি লাভ করেন। পরবর্তীকালে কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের 'বঙ্গভাষা ও সাহিত্য' বিভাগ থেকে স্নাতকোত্তর এবং পি.এইচ.ডি ডিগ্রি লাভ করেন। তাঁর গবেষণার

ଆଶିଷ, ଅମାଜ ଓ ଅନ୍ୟତା



ଅମ୍ପାଦନା

ପରିମଳ ମନ୍ଦଳ
ବଞ୍ଚନ ମାହାତି

Sahitya, Samaj O Sanskriti

Edited by

Parimal Mandal

&

Ranjan Mahata

প্রথম প্রকাশ: জুন, ২০২৩

© কগনিশ্বন পাবলিকেশনস্

প্রকাশক

অরেন্স মহালদার

কগনিশ্বন পাবলিকেশনস্ (Cognition Publications)

পশ্চিম সপ্তগ্রাম, বিশরপাড়া, বিরাটি, কলিকাতা-৭০০০৫১

<http://cognitionpublications.com/>

E.Mail: cognitionpublications@gmail.com

ফোন: +৯১ ৭০৪৪৭৭২৩৯২

ISBN : 978-93-92205-32-3

মুদ্রক: এস পি কমিউনিকেশনস্ প্রাঃ লিঃ, কলিকাতা-৭০০০০৯

প্রচ্ছদচিত্রঃ সৈকত মজুমদার

মূল্য: ৪৭৫ টাকা

একাদশ অধ্যায়: শ্রীমদ্ভগবদগীতোক্ত ভক্তিযোগ ও বর্তমান সময়ে তার প্রাসঙ্গিকতা একটি পাঠবিমর্শ শ্রীরামস্বরূপ মুখার্জী	পৃষ্ঠা ১০৫
দ্বাদশ অধ্যায়: মূল্যবোধের অবক্ষয় ও নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায়ের কয়েকটি ছোটগল্প মধুমিতা বসু	পৃষ্ঠা ১১৫
ত্রয়োদশ অধ্যায়: মহাশ্বেতা দেবীর ছোটগল্পে পশ্চিম রাঢ়ের গ্রাম জীবন দীপঙ্কর সরকার	পৃষ্ঠা ১২৫
চতুর্দশ অধ্যায়: উপজাতিদের মধ্যে সামাজিক বিচলন — প্রসঙ্গ পশ্চিমবঙ্গ দেবাশীষ সরকার	পৃষ্ঠা ১৩১
পঞ্চদশ অধ্যায়: ভারতীয় উপজাতীদের স্বাস্থ্য এবং স্বাস্থ্যসংক্রান্ত বিশ্বাস: একটি সাহিত্য পর্যালোচনা সঞ্জিত দেবনাথ	পৃষ্ঠা ১৪০
ষষ্ঠদশ অধ্যায়: বিশ্বায়নের কালে সাহিত্য পড়া ও পড়ানো দূর্বা বসু	পৃষ্ঠা ১৫০
সপ্তদশ অধ্যায়: বাণেশ্বর বিদ্যালঙ্কারের সারস্বত অবদান প্রদীপ কুমার মহাপাত্র	পৃষ্ঠা ১৫৫
অষ্টাদশ অধ্যায়: সায়ণাচার্যের বেদব্যাখ্যা পদ্ধতি: একটি সংক্ষিপ্ত আলোচনা মানবেন্দু সরকার	পৃষ্ঠা ১৬৬
উনবিংশ অধ্যায়: মৃচ্ছকটিকে বৈদিকতত্ত্বানুসন্ধান: একটি সমীক্ষা মধুমিতা ঘোষ	পৃষ্ঠা ১৭২
বিংশ অধ্যায়: সলিমুল্লাহ খানের 'উৎসর্গ: পরিবার প্রজাতি রাষ্ট্র' মুহাম্মদ ইসহাক	পৃষ্ঠা ১৮৪
একবিংশ অধ্যায়: পুঁথি বিশারদ অক্ষয়কুমার কয়াল দীপঙ্কর নস্কর	পৃষ্ঠা ১৮৯

ভারতীয় উপজাতীদের স্বাস্থ্য এবং স্বাস্থ্যসংক্রান্ত বিশ্বাস: একটি সাহিত্য পর্যালোচনা

সঞ্জিত দেবনাথ

ভূমিকা: আদমশুমারি 2011 অনুসারে, ভারতের উপজাতীয় জনসংখ্যা দেশের মোট জনসংখ্যার 8.6 শতাংশ। উপজাতীয়দের সাধারণত আদিমজাতি, বনবাসী, আদিবাসী, পাহাড়ি এবং অনুসূচিত জনজাতি হিসাবে উল্লেখ করা হয়। তারা সাংবিধানিকভাবে অনুসূচিত জনজাতি নামে পরিচিত। ভারতে, তপশিলী উপজাতির 705 টি গোষ্ঠীকে এখনও পর্যন্ত চিহ্নিত করা হয়েছে এবং সংবিধান দ্বারা স্বীকৃত করা হয়েছে। প্রতি বছর উপজাতীয় জনসংখ্যার ক্রমাগত বৃদ্ধি হচ্ছে (সারণী 1 দেখুন)। তারা দেশের বিভিন্ন অঞ্চলের বিভিন্ন পরিবেশগত এবং ভূ-জলবায়ুতে বসবাস করে। বিশ্বায়নের যুগে উপজাতিরা সম্পূর্ণরূপে অনন্য এবং ভিন্ন জীবনধারা, সংস্কৃতি এবং তাদের পরিচয় প্রদর্শন করে। তারা এখনও দেশের প্রান্তিক এবং আরও ঝুঁকিপূর্ণ জনগোষ্ঠী। যদিও ভারত সরকার তাদের উন্নতি ও সমাজজীবনের মূলধারায় নিয়ে আসার জন্য অনেক উন্নয়নমূলক এবং কল্যাণমূলক প্রকল্প গ্রহণ করেছে, তবুও এই গোষ্ঠীগুলি এখনও অর্থনৈতিক এবং সামাজিকভাবে দুর্বল এবং ঝুঁকিপূর্ণ জীবনযাপন করে থাকেন।

সারণী 1. ভারতে তফসিলি উপজাতির জনসংখ্যা 1961-2011

আদমশুমারির বছর	জনসংখ্যা			দশকের বৃদ্ধির হার		
	মোট	গ্রামীণ	শহুরে	মোট	গ্রামীণ	শহুরে
1961	3,01,20,184	2,93,57,790	7,72,394			
1971	3,80,15,162	3,67,20,681	12,94,481	26.2	25.2	67.6
1981	5,16,28,638	4,84,27,604	32,01,034	35.8	31.9	147.3
1991	6,77,58,380	6,27,51,026	50,07,354	31.2	29.6	56.4
2001	8,43,26,978	7,73,39,335	69,87,643	24.5	23.2	39.5
2011	10,42,81,034	9,38,19,162	1,04,61,872	23.7	21.3	49.7

(সূত্র: ভারতের আদমশুমারি)

ଆଶିଷ, ଅମାଜ ଓ ଅନୁକୃତି



ଅମ୍ପାଦନା

ପରିମଳ ମଣ୍ଡଳ
ବଞ୍ଚନ ମାହାନ୍ତି

সাহিত্য, সমাজ ও সংস্কৃতি



পরিমল মন্ডল

ড. পরিমল মন্ডল — স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়ের সংস্কৃত বিভাগের সহকারী অধ্যাপক এবং বিভাগীয় প্রধান এর দায়িত্ব পালন করছেন। তিনি মালদা কলেজ থেকে 2012 সালে সংস্কৃত বিষয়ে স্নাতক, কাশী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয় থেকে 2014 সালে সংস্কৃতে স্নাতকোত্তর, এবং পণ্ডিতেরী বিশ্ববিদ্যালয় থেকে 2020 সালে শ্রীমদ্ভগবদ্গীতার পুঁথি সম্পাদনায় পিএইচডি উপাধি প্রাপ্ত করেন। বর্তমানে যে বিষয়গুলিতে তাঁর গবেষণার আগ্রহ তা হলো আঞ্চলিক সাহিত্য ও সংস্কৃতি চর্চা, বেদান্ত, পুঁথিবিদ্যা, অনুবাদ ও অনুবাদতত্ত্ব ইত্যাদি। তিনি সদ্য কয়েকমাস আগে সাহিত্য, সমাজ এবং সংস্কার নামক একটি হিন্দী ভাষায় পুস্তক সংকলন করেছেন। সেটি প্রকাশিত হয়েছে শোখ প্রকাশন, হিসার থেকে। এছাড়া তিনি বিভিন্ন গবেষণামূলক পত্রিকায় লেখালেখি করে থাকেন।



রঞ্জন মাহাত

শ্রী রঞ্জন মাহাত — পুরুলিয়া জেলার হুড়া থানার অন্তর্গত আলোকডি নামক গ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। বিগত ৬ বছর যাবৎ তিনি হুগলী জেলার কবিকঙ্কণ মুকুন্দরাম মহাবিদ্যালয়ের অন্তর্গত সংস্কৃত বিভাগের সহকারী অধ্যাপক এবং বিভাগীয় প্রধানের দায়িত্ব পালন করে চলেছেন। তিনি পুরুলিয়া জেলার জগন্নাথ কিশোর মহাবিদ্যালয় থেকে ২০১২ সালে সংস্কৃত বিষয় স্নাতক, কাশী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয় থেকে ২০১৪ সালে সংস্কৃতে স্নাতকোত্তর এবং ২০১৫ সালে ত্রিপুরা রাজ্যের একলব্য ক্যাম্পাস থেকে বি.এড ডিগ্রি লাভ করেন। বর্তমানে তিনি রবীন্দ্রভারতী বিশ্ববিদ্যালয়ে গবেষণারত। এছাড়া তিনি বিভিন্ন গবেষণামূলক পত্রপত্রিকায় এবং পুস্তকে লেখালেখি করছেন। তাঁর গবেষণামূলক কাজের পরিধির মধ্যে রয়েছে পুঁথি, বেদান্ত দর্শন ও অন্যান্য।



Cognition Publications

West Saptagram, Bisharpara, Birati,
Kolkata-700051, India
E-mail: cognitionpublications@gmail.com
Contact: +91 70447 72392
Web: www.cognitionpublications.com

ISBN: 978-93-92205-32-3



9 789392 205323

সাহিত্য, সমাজ ও সংস্কৃতি

সম্পাদনা

পরিমল মন্ডল

রঞ্জন মাহাত



কগনিশন পাবলিকেশনস্

পশ্চিম সপ্তগ্রাম, বিশরপাড়া, বিরাটি, কলিকাতা-৭০০০৫১

Sahitya, Samaj O Sanskriti

Edited by

Parimal Mandal

&

Ranjan Mahata

প্রথম প্রকাশ: জুন, ২০২৩

© কগনিশ্বন পাবলিকেশনস্

প্রকাশক

অরেন্স মহালদার

কগনিশ্বন পাবলিকেশনস্ (Cognition Publications)

পশ্চিম সপ্তগ্রাম, বিশরপাড়া, বিরাটি, কলিকাতা-৭০০০৫১

<http://cognitionpublications.com/>

E.Mail: cognitionpublications@gmail.com

ফোন: +৯১ ৭০৪৪৭৭২৩৯২

ISBN : 978-93-92205-32-3

মুদ্রক: এস পি কমিউনিকেশনস্ প্রাঃ লিঃ, কলিকাতা-৭০০০০৯

প্রচ্ছদচিত্রঃ সৈকত মজুমদার

মূল্য: ৪৭৫ টাকা

সূচিপত্র

প্রথম অধ্যায়: ভারতীয় সমাজে মহিলাদের অধিকার ও অবস্থান মৌসুমি কুন্ডু	পৃষ্ঠা ১৫
দ্বিতীয় অধ্যায়: নারী ক্ষমতায়ন: সেকাল ও একাল পিয়া সিংহ	পৃষ্ঠা ২২
তৃতীয় অধ্যায়: সমাজতত্ত্বের মনস্তত্ত্বে নারীত্বের নবমূল্যায়ন — Bengali Fiction: "Ragged end" শুভেন্দু ঘোষ	পৃষ্ঠা ৩২
চতুর্থ অধ্যায়: মধ্যযুগে বাংলা সাহিত্যে বঙ্গনারীর সামাজিক অবস্থান সুরজিৎ মন্ডল	পৃষ্ঠা ৩৭
পঞ্চম অধ্যায়: বিবাহ: নারীর স্বতন্ত্র সত্তার পরিপন্থী তাপস দাস	পৃষ্ঠা ৪৭
ষষ্ঠ অধ্যায়: বৈবাহিক সম্পর্ক ও তার স্থায়ীত্বের সঙ্কট: একটি সমাজতাত্ত্বিক বিশ্লেষণ সুদেষ্ণা মিত্র	পৃষ্ঠা ৫৮
সপ্তম অধ্যায়: সংস্কৃতসাহিত্যে ভারতীয় সমাজব্যবস্থা ও সংস্কৃতির স্বরূপ অপূর্ব গরাই	পৃষ্ঠা ৭১
অষ্টম অধ্যায়: সাহিত্য — সমাজ — সংস্কৃতির আদর্শে বিভূতিভূষণ ও তাঁর ইছামতীর সমাজ ও সংস্কৃতি প্রেমাক্ষর মিশ্র	পৃষ্ঠা ৭৭
নবম অধ্যায়: নলিনী বেরার কথাসাহিত্যে সমাজ চেতনা পিন্টু সাইনি	পৃষ্ঠা ৮৫
দশম অধ্যায়: প্রাত্যহিক জীবনে শ্রীমদ্ভগবৎগীতার প্রাসঙ্গিকতা নন্দিতা বারুই	পৃষ্ঠা ৯৮

একাদশ অধ্যায়: শ্রীমদ্ভগবদগীতোক্ত ভক্তিযোগ ও বর্তমান সময়ে তার প্রাসঙ্গিকতা: একটি পাঠবিমর্শ শ্রীরামস্বরূপ মুখার্জী	পৃষ্ঠা ১০৭
দ্বাদশ অধ্যায়: মূল্যবোধের অবক্ষয় ও নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায়ের কয়েকটি ছোটগল্প মধুমিতা বসু	পৃষ্ঠা ১১৫
ত্রয়োদশ অধ্যায়: মহাশ্বেতা দেবীর ছোটগল্পে পশ্চিম রাঢ়ের গ্রাম জীবন দীপঙ্কর সরকার	পৃষ্ঠা ১২৫
চতুর্দশ অধ্যায়: উপজাতিদের মধ্যে সামাজিক বিচলন — প্রসঙ্গ পশ্চিমবঙ্গ দেবাশীষ সরকার	পৃষ্ঠা ১৩১
পঞ্চদশ অধ্যায়: ভারতীয় উপজাতিদের স্বাস্থ্য এবং স্বাস্থ্যসংক্রান্ত বিশ্বাস: একটি সাহিত্য পর্যালোচনা সঞ্জিত দেবনাথ	পৃষ্ঠা ১৪০
ষষ্ঠদশ অধ্যায়: বিশ্বায়নের কালে সাহিত্য পড়া ও পড়ানো দূর্বা বসু	পৃষ্ঠা ১৫০
সপ্তদশ অধ্যায়: বাণেশ্বর বিদ্যালঙ্কারের সারস্বত অবদান প্রদীপ কুমার মহাপাত্র	পৃষ্ঠা ১৫৫
অষ্টাদশ অধ্যায়: সায়ণাচার্যের বেদব্যাখ্যা পদ্ধতি: একটি সংক্ষিপ্ত আলোচনা মানবেন্দু সরকার	পৃষ্ঠা ১৬৬
উনবিংশ অধ্যায়: মূচ্ছকটিকে বৈদিকতত্ত্বানুসন্ধান: একটি সমীক্ষা মধুমিতা ঘোষ	পৃষ্ঠা ১৭২
বিংশ অধ্যায়: সলিমুল্লাহ খানের 'উৎসর্গ: পরিবার প্রজাতি রাষ্ট্র' মুহাম্মদ ইসহাক	পৃষ্ঠা ১৮৪
একবিংশ অধ্যায়: পুঁথি বিশারদ অক্ষয়কুমার কয়াল দীপঙ্কর নস্কর	পৃষ্ঠা ১৮৯

দ্বাবিংশ অধ্যায়: মানুষ তবুও স্বর্গী পৃথিবীরই কাছে: জীবনানন্দের কবিতা
সুরজিৎ প্রামাণিক পৃষ্ঠা ২০৫

ত্রয়োবিংশ অধ্যায়: অন্নদামঙ্গল কাব্য: শিল্পের রূপ ও রূপান্তর
অন্তরা ব্যানার্জী পৃষ্ঠা ২১৮

চতুর্বিংশ অধ্যায়: মানবশরীর গঠনে পঞ্চমহাভূত এবং প্রাচীন ভারতের আয়ুর্বেদশাস্ত্র
- একটি সংক্ষিপ্ত অধ্যয়ন
স্বপন বিশ্বাস পৃষ্ঠা ২২৭

পঞ্চবিংশ অধ্যায়: ধর্মশাস্ত্রীয়নিবন্ধগ্রন্থে দানপরম্পরা - একটি সংক্ষিপ্ত সমীক্ষা
রঞ্জন মাহাত এবং পরিমল মন্ডল পৃষ্ঠা ২৩৫

ষড়বিংশ অধ্যায়: হরিশংকর জলদাসের 'কুন্তীর বস্ত্রহরণ': সংখ্যালঘু উন্মূল মানুষের
জীবনালেখ্য
আব্দুল সামাদ পৃষ্ঠা ২৪১

লেখক পরিচিতি পৃষ্ঠা ২৫২

উপদেষ্টা মন্ডলী পৃষ্ঠা ২৬৩

বিশ্বায়নের কালে সাহিত্য পড়া ও পড়ানো

দূর্বা বসু

রবীন্দ্রনাথের ঘরে বাইরে উপন্যাসের বিষয়বস্তু কি নিছকই বিবাহবহির্ভূত সম্পর্ক? এই আলোচনায় স্বদেশী আন্দোলন কোনভাবে এসে পড়লেই, তাকে ঘিরে প্রাথমিক উচ্ছ্বাস এবং পরবর্তী মোহভঙ্গের প্রসঙ্গও অবধারিতভাবে এসে পড়বে। সন্দীপের সুযোগসন্ধানী মনোভাব এবং স্বেচ্ছাচারিতা আর বৃহত্তর স্বার্থে নিখিলেশের নিজস্বার্থ বলিদান দেওয়ার ক্ষমতার ব্যাখ্যা ব্যতীত উপন্যাসটির মর্মে পৌঁছানো যায় না, এবং স্বদেশী আন্দোলনের প্রেক্ষাপট সরিয়ে নিলে সেই ব্যাখ্যাতেও ফাঁকি থেকে যায়। অর্থাৎ, একটি উপন্যাসের তথা, যে কোনও রচনার, ঐতিহাসিক পটভূমিকার একটা মৌলিক গুরুত্ব রয়েছে তার বিশ্লেষণে। কিন্তু এটাও তো ঠিক যে বিবাহবহির্ভূত সম্পর্ক যুগ যুগ ধরে সাহিত্যের উপজীব্য হয়ে এসেছে। তবে কি সেই বিষয়বস্তু ধরে কোনও বিশ্লেষণ ফলপ্রসূ হতে পারে না? এখানেই বলে রাখি যে, এহেন বিষয়কেন্দ্রিক সাহিত্যবিশ্লেষণের গুরুত্বকে কোনভাবে খাটো করা এই প্রবন্ধের উদ্দেশ্য নয়। সমসাময়িক বিশ্বায়নের কালে সাহিত্যবিশ্লেষণের কিছু প্রক্রিয়া দেখা যাচ্ছে, যাতে করে রচনার ঐতিহাসিক প্রেক্ষাপট প্রায় গুরুত্বহীন হয়ে পড়ছে। এই গুরুত্বহীনতা একাধারে একটি বিস্মরণের প্রক্রিয়াও বটে। বর্তমান প্রবন্ধ সেই বিস্মরণের বিরুদ্ধে বিলাপমাত্র।

বিশ্বায়ন বা globalization-এর সংজ্ঞার সমস্ত তর্কের গভীরে যাওয়ার অবকাশ এখানে না থাকলেও এইটুকু বলে নিতে হবে যে সমসাময়িক কালে আমরা তার একটা রূপ দেখছি, এবং বিশ্বায়ন আসলে শুরু হয়েছে প্রায় শিল্প বিপ্লবের হাত ধরেই। সূচক হিসেবে আমরা যদি *Communist Manifesto* (1848) পড়ে দেখি, দেখব যে সেই মুহূর্তে পুঁজিবাদের যে চিত্র দিচ্ছেন মার্ক্স ও এংগেলস, আমাদের সময়ের বিবর্তিত পুঁজিবাদের ক্ষেত্রেও তা সমান প্রযোজ্য।^১ অর্থাৎ, বলা যায় যে পুঁজিবাদের উষালগ্ন থেকেই বিশ্বায়ন তার সঙ্গী। সেই কারণেই "সমসাময়িক বিশ্বায়ন" শব্দবন্ধটি ব্যবহার করছি সাহিত্যচর্চার কিছু বিবর্তনের আলোচনার

‘উদাহরণস্বরূপ বহু’ উদ্ধৃত কয়েকটি বাক্যঃ-All that is solid melts into air, all that is holy is profaned, and man is at last compelled to face with sober senses his real conditions of life, and his relations with his kind.

The need of a constantly expanding market for its products chases the bourgeoisie over the entire surface of the globe. It must nestle everywhere, settle everywhere, establish connexions everywhere." Marx, Karl and F. Engels, *The Communist Manifesto*

ডীগ্রি অর্জন করেছেন। বর্তমানে বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয়ের অধীনস্থ স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়ে বাংলা বিভাগে সহকারি অধ্যাপক হিসাবে কর্মরত। তাঁর গবেষণার বিষয় মহাশ্বেতা দেবীর ছোটগল্পে গ্রামবাংলার জনজীবন। এছাড়াও দলিত সাহিত্য মতুয়া সাহিত্য বিষয়ে তাঁর বিশেষ আগ্রহ ও অনুসন্ধিৎসা রয়েছে। ইতিমধ্যে তাঁর কিছু লেখা বিভিন্ন পত্র-পত্রিকায় প্রকাশিত হয়েছে।

দীপঙ্কর নস্কর

প্রবন্ধ: পুঁথি বিশারদ অক্ষয়কুমার কয়াল

দীপঙ্কর নস্কর, সহকারী অধ্যাপক, ইতিহাস বিভাগ, বিধানচন্দ্র কলেজ, আসানসোল। আঞ্চলিক ইতিহাস গবেষক, ক্ষেত্র সমীক্ষক, গাঙ্গেয় জনপদের লোকসংস্কৃতি চর্চায় দীর্ঘ দু দশক ধরে গবেষণায়রত। তার লেখা বিভিন্ন প্রবন্ধ আন্তর্জাতিক এবং জাতীয় স্তরের পত্রপত্রিকায় সমাদৃত। তার লিখিত ও সম্পাদিত বইগুলি হল- ১. নারীর কণ্ঠস্বর ও নারীর জীবন, Women's Voices- Women's Lives, ২. দক্ষিণ চব্বিশ পরগনার ইতিহাস চর্চা (১ম খণ্ড), ৩. গ্রাম নামে দক্ষিণ ২৪ পরগনা, ৪. দক্ষিণ ২৪ পরগনার বাড়ির দুর্গা, ৫. বিস্ময়ে ভরা সুন্দরবন ইত্যাদি।

ড. দূর্বা বসু

প্রবন্ধ: বিশ্বায়নের কালে সাহিত্য পড়া ও পড়ানো

দূর্বা বসু বেথুন কলেজ থেকে ইংরেজিতে স্নাতক, যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয় থেকে ইংরেজিতে স্নাতকোত্তর, এবং নিউ ইয়র্ক বিশ্ববিদ্যালয় থেকে পিএইচডি। ঔপনিবেশিক বাংলার ভাষাগত কিছু বিষয় নিয়ে পিএইচডি-র গবেষণা। সেই সূত্রেই তাঁর গবেষণার ক্ষেত্র হলো উত্তরঔপনিবেশিক সাহিত্য ও সংস্কৃতি (postcolonial literatures and cultures), মুদ্রিত পুস্তকের ইতিহাস (history of the book), আধুনিকতা (modernisms and modernities), অনুবাদ ও অনুবাদতত্ত্ব (translation), ফটোগ্রাফি, বিশেষত দক্ষিণ এশিয়া কেন্দ্র করে। সাতটি ভাষা চর্চা করেছেন এবং অনুবাদ করে থাকেন। যাদবপুর ইউনিভার্সিটি প্রেস থেকে সৈয়দ মুজতবা আলীর ছোটগল্পের ইংরেজি অনুবাদের সংকলনে তাঁর একটি গল্পের অনুবাদ প্রকাশিতব্য। যারা পরিয়াদী পত্রিকায় তাঁর ফটোগ্রাফ ও লেখা প্রকাশিত হয়েছে, এ ছাড়াও The Telegraph-এর জন্য তিনি গ্রন্থ সমালোচনা করেছেন। বর্তমানে postcolonial pedagogy সম্পর্কে লেখালিখি করছেন।

আশ্রিত্য, সমাজ ও সংস্কৃতি



সম্পাদনা
পরিমল মন্ডল
রঞ্জন মাহাতি

Sahitya, Samaj O Sanskriti

Edited by

Parimal Mandal

&

Ranjan Mahata

প্রথম প্রকাশ: জুন, ২০২৩

© কগনিশ্ন পাবলিকেশনস্

প্রকাশক

অরেন্স মহালদার

কগনিশ্ন পাবলিকেশনস্ (Cognition Publications)
পশ্চিম সপ্তগ্রাম, বিশরপাড়া, বিরাটি, কলিকাতা-৭০০০৫১

<http://cognitionpublications.com/>

E.Mail: cognitionpublications@gmail.com

ফোন: +৯১ ৭০৪৪৭৭২৩৯২

ISBN : 978-93-92205-32-3

মুদ্রক: এস পি কমিউনিকেশনস্ প্রাঃ লিঃ, কলিকাতা-৭০০০০৯

প্রচ্ছদচিত্রঃ সৈকত মজুমদার

মূল্য: ৪৭৫ টাকা

সূচিপত্র

প্রথম অধ্যায়: ভারতীয় সমাজে মহিলাদের অধিকার ও অবস্থান মৌসুমি কুন্ডু	পৃষ্ঠা ১৫
দ্বিতীয় অধ্যায়: নারী ক্ষমতায়ন: সেকাল ও একাল পিয়া সিন্হা	পৃষ্ঠা ২২
তৃতীয় অধ্যায়: সমাজতত্ত্বের মনস্তত্ত্বে নারীত্বের নবমূল্যায়ন — Bengali Fiction: "Ragged end" শুভেন্দু ঘোষ	পৃষ্ঠা ৩২
চতুর্থ অধ্যায়: মধ্যযুগে বাংলা সাহিত্যে বঙ্গনারীর সামাজিক অবস্থান সুরজিৎ মন্ডল	পৃষ্ঠা ৩৭
পঞ্চম অধ্যায়: বিবাহ: নারীর স্বতন্ত্র সত্তার পরিপন্থী তাপস দাস	পৃষ্ঠা ৪৭
ষষ্ঠ অধ্যায়: বৈবাহিক সম্পর্ক ও তার স্থায়ীত্বের সঙ্কট: একটি সমাজতাত্ত্বিক বিশ্লেষণ সুদেষ্ণা মিত্র	পৃষ্ঠা ৫৮
সপ্তম অধ্যায়: সংস্কৃতসাহিত্যে ভারতীয় সমাজব্যবস্থা ও সংস্কৃতির স্বরূপ অপূর্ব গরাই	পৃষ্ঠা ৭১
অষ্টম অধ্যায়: সাহিত্য — সমাজ — সংস্কৃতির আদর্শে বিভূতিভূষণ ও তাঁর ইছামতীর সমাজ ও সংস্কৃতি প্রেমান্বুর মিশ্র	পৃষ্ঠা ৭৭
নবম অধ্যায়: নলিনী বেরার কথাসাহিত্যে সমাজ চেতনা পিন্টু সাইনি	পৃষ্ঠা ৮৫
দশম অধ্যায়: প্রাত্যহিক জীবনে শ্রীমদ্ভগবৎগীতার প্রাসঙ্গিকতা নন্দিতা বারুই	পৃষ্ঠা ৯৮

একাদশ অধ্যায়: শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাত্ত্ব ভক্তিযোগ ও বর্তমান সময়ে তার প্রাসঙ্গিকতা
একটি পাঠবিমর্শ
শ্রীরামস্বরূপ মুখার্জী পৃষ্ঠা ১০৭

দ্বাদশ অধ্যায়: মূল্যবোধের অবক্ষয় ও নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায়ের কয়েকটি ছোটগল্প
মধুমিতা বসু পৃষ্ঠা ১১৭

ত্রয়োদশ অধ্যায়: মহাশ্বেতা দেবীর ছোটগল্পে পশ্চিম রাঢ়ের গ্রাম জীবন
দীপঙ্কর সরকার পৃষ্ঠা ১২৫

চতুর্দশ অধ্যায়: উপজাতিদের মধ্যে সামাজিক বিচলন — প্রসঙ্গ পশ্চিমবঙ্গ
দেবশীষ সরকার পৃষ্ঠা ১৩১

পঞ্চদশ অধ্যায়: ভারতীয় উপজাতিদের স্বাস্থ্য এবং স্বাস্থ্যসংক্রান্ত বিশ্বাস: একটি
সাহিত্য পর্যালোচনা
সঞ্জিত দেবনাথ পৃষ্ঠা ১৪০

ষষ্ঠদশ অধ্যায়: বিশ্বায়নের কালে সাহিত্য পড়া ও পড়ানো
দূর্বা বসু পৃষ্ঠা ১৫০

সপ্তদশ অধ্যায়: বাণেশ্বর বিদ্যালঙ্কারের সারস্বত অবদান
প্রদীপ কুমার মহাপাত্র পৃষ্ঠা ১৫৫

অষ্টাদশ অধ্যায়: সায়ণাচার্যের বেদব্যাখ্যা পদ্ধতি: একটি সংক্ষিপ্ত আলোচনা
মানবেন্দু সরকার পৃষ্ঠা ১৬৬

ঊনবিংশ অধ্যায়: মূচ্ছকটিকে বৈদিকতত্ত্বানুসন্ধান: একটি সমীক্ষা
মধুমিতা ঘোষ পৃষ্ঠা ১৭২

বিংশ অধ্যায়: সলিমুল্লাহ খানের 'উৎসর্গ: পরিবার প্রজাতি রাষ্ট্র'
মুহাম্মদ ইসহাক পৃষ্ঠা ১৮৫

একবিংশ অধ্যায়: পুঁথি বিশারদ অক্ষয়কুমার কয়াল
দীপঙ্কর নন্দর পৃষ্ঠা ১৮৮

দ্বাবিংশ অধ্যায়: মানুষ তবুও ঋণী পৃথিবীরই কাছে: জীবনানন্দের কবিতা
সুরজিৎ প্রামাণিক পৃষ্ঠা ২০৫

ত্রয়োবিংশ অধ্যায়: অন্নদামঙ্গল কাব্য: শিল্পের রূপ ও রূপান্তর
অন্তরা ব্যানার্জী পৃষ্ঠা ২১৮

চতুর্বিংশ অধ্যায়: মানবশরীর গঠনে পঞ্চমহাভূত এবং প্রাচীন ভারতের আবুর্বেদশাস্ত্র
— একটি সংক্ষিপ্ত অধ্যয়ন
স্বপন বিশ্বাস পৃষ্ঠা ২২৭

পঞ্চবিংশ অধ্যায়: ধর্মশাস্ত্রীয়নিবন্ধগ্রন্থে দানপরম্পরা — একটি সংক্ষিপ্ত সমীক্ষা
রঞ্জন মাহাত এবং পরিমল মন্ডল পৃষ্ঠা ২৩৫

ষড়বিংশ অধ্যায়: হরিশংকর জলদাসের 'কুস্তীর বস্ত্রহরণ': সংখ্যালঘু উন্মূল মানুষের
জীবনালেখ্য
আব্দুল সামাদ পৃষ্ঠা ২৪১

লেখক পরিচিতি পৃষ্ঠা ২৫২

উপদেষ্টা মন্ডলী পৃষ্ঠা ২৬৩

ধর্মশাস্ত্রীয়নিবন্ধগ্রন্থে দানপরম্পরা — একটি সংক্ষিপ্ত সমীক্ষা

রঞ্জন মাহাত

এবং

পরিমল মন্ডল

সারসংক্ষেপ: বৈদিক রীতিনীতি কালক্রমে মানুষের নিকট জটিল হওয়ার ফলে ধর্মশাস্ত্র একটি হয়ে ওঠে। ঋষিদ্বারা প্রণীত স্মৃতিগ্রন্থ সংখ্যায় অনেক। সেগুলিতে বর্ণিত বিষয় এবং সিদ্ধান্তের মধ্যে কোনো পার্থক্য লক্ষিত হয় না বরং কোথাও কোথাও বিরোধভাসের অশঙ্কা জন্মায়। অতএব এই অশঙ্কার নিবারণের হেতু বিভিন্নগ্রন্থে প্রতিপাদিত বিষয়গুলির সংকলন করার দৃষ্টিকোণ থেকেই নিবন্ধসাহিত্যের পরম্পরা প্রচলিত। ধর্মশাস্ত্রীয় বচনগুলির একত্র সংগ্রহ এবং সন্দেহের নিরবসানের ক্ষেত্রে মহত্বপূর্ণ ভূমিকা থাকার জন্য এদের নির্ণয়গ্রন্থও বলা যেতে পারে। নিবন্ধসাহিত্যের পরম্পরা ভারতের বিভিন্ন প্রান্তের রাজা মহারাজাদের সংরক্ষণে, বহু বিদ্বানদের সহযোগে প্রচলিত ছিল। বিভিন্ন লেখকের দ্বারা ধর্মশাস্ত্রনির্মাণের জন্য ধর্মসম্পাদন হেতু প্রযত্ন করেছেন। দেশ কালের অনুসারে বুরবার, বোঝাবার প্রক্রিয়ার মধ্যে পার্থক্য লক্ষ্য করা যায়। যার কারণে বিভিন্ন ধর্মশাস্ত্র, নিবন্ধগ্রন্থ প্রভৃতি গ্রন্থের রচনার অবশ্যকতা অনুভূত হয়। এই দানসাহিত্যসম্বন্ধীয় নিবন্ধগ্রন্থ এবং তাদের রচনাকর্তা সম্বন্ধে আলোচনা সংক্ষিপ্তভাবে নিম্নে প্রদর্শনের চেষ্টা করা হচ্ছে।

মূল শব্দ: দান, বেদ, মহাভারত, ধর্মশাস্ত্র, দানবিষয়ক গ্রন্থ।

বেদ হল ভারতীয় সংস্কৃতির স্তম্ভস্বরূপ। প্রাচীন ভারতীয় সংস্কৃতির ধারক ও বহক হল বেদ। যা ঋষিগণ তাঁদের স্বাচরিততপোবলের মাধ্যমে লাভ করেছিলেন। সেই নির্মল, নিখিল শব্দরাশিরূপ বেদরাশির সরল শব্দবোধের জন্য পুরাণ, নিরুক্ত এবং ধর্মশাস্ত্রের প্রয়োজন প্রাচীন কাল থেকে চলে আসছে। এই ধর্মশাস্ত্রের অপর নাম স্মৃতি। কারণ বেদমূলক বিধিই স্মৃতির মাধ্যমে প্রকাশিত হয়। তাই মুনসংহিতায় বলা হয়েছে-

শ্রুতিস্তু বেদো বিজ্ঞেয়ো ধর্মশাস্ত্রং তু বৈ স্মৃতিঃ।। মনু-২.১০

সমাজ ও জীবনের ধর্মানুগ কর্তব্য নিয়ন্ত্রিত করেছে ঋষিপ্রণীত স্মৃতির অনুশাসন। স্মৃতি ও ধর্মশাস্ত্রের ইতিহাসে ধর্মসূত্র, স্মৃতিসংহিতাও সর্বশেষে নিবন্ধসাহিত্যের বিশেষ ভূমিকা আছে। ধর্মসূত্রের উদ্ভব হয় বৈদিক সংস্কৃতির সঙ্গে সম্পর্কিত বেদাঙ্গ সাহিত্যের যুগে। বেদোক্ত ক্রিয়াকলাপের পরিপাটি রচিত হয়েছে কল্পসূত্রে। কল্পসূত্র হল অন্যতম বেদাঙ্গসূত্র- শ্রৌত, গৃহ্য, ধর্ম, শুদ্ধ ভেদে চার প্রকার। পাণিনীয় শিক্ষায় কল্পসূত্রকে বেদপুরুষের হাত কল্পনা করে বলা হয়েছে-

সাহিত্য, সমাজ ও সংস্কৃতি



পরিমল মন্ডল

ড. পরিমল মন্ডল — স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়ের সংস্কৃত বিভাগের সহকারী অধ্যাপক এবং বিভাগীয় প্রধান এর দায়িত্ব পালন করছেন। তিনি মালদা কলেজ থেকে 2012 সালে সংস্কৃত বিষয়ে স্নাতক, কাশী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয় থেকে 2014 সালে সংস্কৃতে স্নাতকোত্তর, এবং পণ্ডিচেরী বিশ্ববিদ্যালয় থেকে 2020 সালে শ্রীমদ্ভগবদ্গীতার পুঁথি সম্পাদনায় পিএইচডি উপাধি প্রাপ্ত করেন। বর্তমানে যে বিষয়গুলিতে তাঁর গবেষণার আগ্রহ তা হলো আঞ্চলিক সাহিত্য ও সংস্কৃতি চর্চা, বেদান্ত, পুঁথিবিদ্যা, অনুবাদ ও অনুবাদতত্ত্ব ইত্যাদি। তিনি সদ্য কয়েকমাস আগে সাহিত্য, সমাজ এবং সংস্কার নামক একটি হিন্দী ভাষায় পুস্তক সংকলন করেছেন। সেটি প্রকাশিত হয়েছে শোধ প্রকাশন, হিসার থেকে। এছাড়া তিনি বিভিন্ন গবেষণামূলক পত্রিকায় লেখালেখি করে থাকেন।



রঞ্জন মাহাত

শ্রী রঞ্জন মাহাত — পুরুলিয়া জেলার হুড়া থানার অন্তর্গত আলোকডি নামক গ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। বিগত ৬ বছর যাবৎ তিনি হুগলী জেলার কবিকঙ্কণ মুকুন্দরাম মহাবিদ্যালয়ের অন্তর্গত সংস্কৃত বিভাগের সহকারী অধ্যাপক এবং বিভাগীয় প্রধানের দায়িত্ব পালন করে চলেছেন। তিনি পুরুলিয়া জেলার জগন্নাথ কিশোর মহাবিদ্যালয় থেকে ২০১২ সালে সংস্কৃত বিষয় স্নাতক, কাশী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয় থেকে ২০১৪ সালে সংস্কৃতে স্নাতকোত্তর এবং ২০১৫ সালে ত্রিপুরা রাজ্যের একলব্য ক্যাম্পাস থেকে বি.এড ডিগ্রি লাভ করেন। বর্তমানে তিনি রবীন্দ্রভারতী বিশ্ববিদ্যালয়ে গবেষণারত। এছাড়া তিনি বিভিন্ন গবেষণামূলক পত্রপত্রিকায় এবং পুস্তকে লেখালেখি করছেন। তাঁর গবেষণামূলক কাজের পরিধির মধ্যে রয়েছে পুঁথি, বেদান্ত দর্শন ও অন্যান্য।



Cognition Publications

West Saptagram, Bisharpara, Birati,
Kolkata-700051, India
E-mail: cognitionpublications@gmail.com
Contact: +91 70447 72392
Web: www.cognitionpublications.com

ISBN: 978-93-92205-32-3



9 789392 205323



Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

ଆହିତ୍ୟ, ଅମାଜ ଓ ଅଂସ୍କୃତି



ଅମ୍ପାଦନା

ପରିମଳ ମଣ୍ଡଳ
ବଞ୍ଚନ ମାହାନ୍ତି

Sahitya, Samaj O Sanskriti

Edited by

Parimal Mandal

&

Ranjan Mahata

প্রথম প্রকাশ: জুন, ২০২৩

© কগনিশ্ন পাবলিকেশনস্

প্রকাশক

অরেন্স মহালদার

কগনিশ্ন পাবলিকেশনস্ (Cognition Publications)
পশ্চিম সপ্তগ্রাম, বিশরপাড়া, বিরাটি, কলিকাতা-৭০০০৫১

<http://cognitionpublications.com/>

E.Mail: cognitionpublications@gmail.com

ফোন: +৯১ ৭০৪৪৭৭২৩৯২

ISBN : 978-93-92205-32-3

মুদ্রক: এস পি কমিউনিকেশনস্ প্রাঃ লিঃ, কলিকাতা-৭০০০০৯

প্রচ্ছদচিত্রঃ সৈকত মজুমদার

মূল্য: ৪৭৫ টাকা

সূচিপত্র

প্রথম অধ্যায়: ভারতীয় সমাজে মহিলাদের অধিকার ও অবস্থান মৌসুমি কুন্ডু	পৃষ্ঠা ১৫
দ্বিতীয় অধ্যায়: নারী ক্ষমতায়ন: সেকাল ও একাল পিয়া সিন্হা	পৃষ্ঠা ২২
তৃতীয় অধ্যায়: সমাজতত্ত্বের মনস্তত্ত্বে নারীত্বের নবমূল্যায়ন — Bengali Fiction: "Ragged end" শুভেন্দু ঘোষ	পৃষ্ঠা ৩২
চতুর্থ অধ্যায়: মধ্যযুগে বাংলা সাহিত্যে বঙ্গনারীর সামাজিক অবস্থান সুরজিৎ মন্ডল	পৃষ্ঠা ৩৭
পঞ্চম অধ্যায়: বিবাহ: নারীর স্বতন্ত্র সত্তার পরিপন্থী তাপস দাস	পৃষ্ঠা ৪৭
ষষ্ঠ অধ্যায়: বৈবাহিক সম্পর্ক ও তার স্থায়ীত্বের সঙ্কট: একটি সমাজতাত্ত্বিক বিশ্লেষণ সুদেষ্ণা মিত্র	পৃষ্ঠা ৫৮
সপ্তম অধ্যায়: সংস্কৃতসাহিত্যে ভারতীয় সমাজব্যবস্থা ও সংস্কৃতির স্বরূপ অপূর্ব গরাই	পৃষ্ঠা ৭১
অষ্টম অধ্যায়: সাহিত্য — সমাজ — সংস্কৃতির আদর্শে বিভূতিভূষণ ও তাঁর ইছামতীর সমাজ ও সংস্কৃতি প্রেমাকুর মিশ্র	পৃষ্ঠা ৭৭
নবম অধ্যায়: নলিনী বেরার কথাসাহিত্যে সমাজ চেতনা পিন্টু সাইনি	পৃষ্ঠা ৮৫
দশম অধ্যায়: প্রাত্যহিক জীবনে শ্রীমদ্ভগবৎগীতার প্রাসঙ্গিকতা নন্দিতা বারুই	পৃষ্ঠা ৯৮

মধ্যযুগে বাংলা সাহিত্যে বঙ্গনারীর সামাজিক অবস্থান

সুরজিৎ মণ্ডল

সারসংক্ষেপ: মধ্যযুগে বাংলা সাহিত্যের উল্লেখযোগ্য রচনা গুলি হল- শ্রীকৃষ্ণকীর্তন কাব্য, বৈষ্ণব পদাবলী, মঙ্গল কাব্য, জীবনী সাহিত্য, অনুবাদ সাহিত্য, শাক্ত পদাবলী, আরাকান রাজসভার সাহিত্য, ময়মনসিংহ গীতিকা প্রভৃতি। মধ্যযুগের সাহিত্যে বিশেষ বিশেষ নারী চরিত্র সমূহ হল -

শ্রীকৃষ্ণকীর্তন কাব্য - রাধা, কৃষ্ণ ও বড়াই।

বৈষ্ণব পদাবলীর - রাধা।

শাক্ত পদাবলীর - উমা ও মেনকা।

মঙ্গল কাব্য - মনসা মঙ্গল কাব্যের - মনসা, বেহুলা, সনকা।

চণ্ডীমঙ্গল কাব্যের - ফুল্লরা, লহনা ও খুল্লনা।

অনুবাদ সাহিত্য - সীতা, কৌশল্যা।

জীবনী সাহিত্যে - শচী মাতা, লক্ষ্মীদেবী ও বিষ্ণুপ্রিয়া।

মৈমনসিংহ গীতিকা - মহুয়া, চন্দ্রাবতী, মলুয়া।

আরাকান রাজসভার সাহিত্য - পদ্মাবতী, ময়নামতী ও চন্দ্রানী।

উক্ত চরিত্র গুলি বিশ্লেষণের মাধ্যমে মধ্যযুগে বাংলা সাহিত্যে বঙ্গনারীর সামাজিক, সাংস্কৃতিক ও অর্থনৈতিক অবস্থান চিহ্নিত করাই এই প্রবন্ধের মূল বিষয়। নিম্নে বিস্তারিত আলোচনা করা হল।

মূল শব্দ: মধ্যযুগ, বঙ্গনারী, বাংলা সাহিত্য, সমাজ।

[১]

সাহিত্য সমাজের দর্পণ। সমাজের মানুষের সুখ-দুঃখ, ভালো-মন্দ, আশা-নিরাশার কাহিনী নিয়ে সাহিত্য গড়ে ওঠে। সাহিত্যে মানব হৃদয়ের কথাই বিশেষভাবে প্রাধান্য পায়। এছাড়াও সমকালীন সমাজের বিভিন্ন রীতি-নীতি, আচার-আচরণ, সংস্কৃতি, কিংবাবিভিন্ন ঘটনাবলীও সাহিত্যের মাধ্যমে প্রকট হয়ে ওঠে। বাংলা সাহিত্যও এর ব্যতিক্রম নয়। বাংলা সাহিত্যের প্রতিটি যুগে সমকালীন সমাজের সুস্পষ্ট প্রতিফলন লক্ষ করা যায়।

কালগত দিক থেকে বাংলা সাহিত্য তিনটি যুগে বিভক্ত। প্রাচীনযুগ (৯০০ - ১২০০), মধ্যযুগ (১৩৫০ - ১৮০০), আধুনিক যুগ (১৮০০ - বর্তমান)। প্রায় ছয় শত বছর মধ্যযুগের সময়কাল। মধ্যযুগের প্রথমদিকে প্রায় দেড়শ বছর সাহিত্যের কোনো নিদর্শন না পাওয়ার কারণে তা অন্ধকার যুগ নামে পরিচিত। মধ্যযুগের

সুদেষা মিত্র

প্রবন্ধ: বৈবাহিক সম্পর্ক ও তার স্থায়ীত্বের সঙ্কট - একটি সমাজতাত্ত্বিক বিশ্লেষণ

শ্রীমতি সুদেষা মিত্র বর্তমানে সরোজিনী নাইডু কলেজ ফর উইমেনের সমাজতত্ত্ব বিভাগে স্টেট এডেড কলেজ টিচার হিসাবে কর্মরত। ২০১০ সালে তিনি বানীপুর মহিলা মহাবিদ্যালয় থেকে সমাজতত্ত্ব বিভাগে স্নাতক ডিগ্রী অর্জন করেন এবং ২০১২ সালে তিনি পশ্চিমবঙ্গ রাষ্ট্রীয় বিশ্ববিদ্যালয় থেকে সমাজতত্ত্ব বিষয়ে স্নাতকোত্তর ডিগ্রী অর্জন করেন। তারপরে তিনি ২০১৪ সালে কুরুক্ষেত্র বিশ্ববিদ্যালয় থেকে বি. এড ডিগ্রী সম্পন্ন করেন এবং ২০১৮ সালে চৌধুরী রণবীর সিং বিশ্ববিদ্যালয় থেকে এম.এড ডিগ্রী সম্পন্ন করেন। বর্তমানে তিনি এ.পি.জে. আব্দুল কালাম বিশ্ববিদ্যালয়ে গবেষণা রাত। 'নারীশক্তি: এক অন্তলীন যুদ্ধগাথা' শিরোনামের একটি বইয়ে তার একটি প্রবন্ধ প্রকাশিত হয়েছে। তিনি বিভিন্ন আন্তর্জাতিক সেমিনারে গবেষণামূলক প্রবন্ধ উপস্থাপন করেছেন।

সুরজিৎ মন্ডল

প্রবন্ধ: মধ্যযুগে বাংলা সাহিত্যে বঙ্গনারীর সামাজিক অবস্থান

সুরজিৎ মন্ডল, বর্তমানে স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়ে SACT-1 হিসাবে কর্মরত। ২০১১ সালে বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয় থেকে স্নাতক ডিগ্রী ও ২০১৩ সালে তাম্রলিপ্ত মহাবিদ্যালয় থেকে বাংলায় স্নাতকোত্তর ডিগ্রী লাভ করেন। ইতিমধ্যে কিছু কবিতা বিভিন্ন পত্র-পত্রিকায় হয়েছে। এছাড়াও কিছু প্রবন্ধ বিভিন্ন গ্রন্থে অধ্যায় হিসেবে প্রকাশিত হয়েছে। তাঁর প্রকাশিত প্রবন্ধ 'পণপ্রথা ও নারী নির্যাতন' তাম্রলিপ্ত মহাবিদ্যালয় থেকে প্রকাশিত 'রুচিরা' পত্রিকায় প্রকাশিত হয়। এছাড়াও উল্লেখযোগ্য প্রবন্ধ গুলি হল - 'অনুবাদক বিদ্যাসাগর', হুমায়ুন আহমেদের ছোটগল্পে মুক্তিযুদ্ধ', রবীন্দ্র ছোটগল্পে উপেক্ষিতা নারী', 'বৈষ্ণব পদাবলীর আলোকে রবীন্দ্রসংগীত'। শিক্ষা সারথী বিবেকানন্দ' প্রভৃতি। এখনো তিনি নিরলস ভাবে লিখে চলেছেন।

সুরজিৎ প্রামানিক

প্রবন্ধ: মানুষ তবুও ঋণী পৃথিবীরই কাছে: জীবনানন্দের কবিতা

জন্ম: ২২ আগস্ট ১৯৯৩, দঃ ২৪ পরগণার নীলা গ্রামে। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের অধীনে বাংলায় স্নাতক এবং স্নাতকোত্তর। ভালো লাগার বিষয় 'কবিতা'। ইতিমধ্যে

INNOVATION IN EDUCATION



Edited by

Dr. Debashis Mridha
Subhashree Bera

INNOVATION IN EDUCATION

Edited by
Dr. Debashis Mridha
Subhashree Bera



CRESCENT
PUBLISHING CORPORATION

Innovation in Education

© Editors

First Published: 22nd July, 2023

ISBN 978-93-91771-88-1

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical or photocopying or otherwise, without prior permission in writing from the editors/publisher.

Published by:

CRESCENT PUBLISHING CORPORATION

4806/24, Mathur Lane,

Ansari Road, Darya Ganj,

New Delhi - 110 002

Ph.: 011 - 23244131

Mob.: + 91 - 9711991838, 9999021668

E-mail: crescentbook@gmail.com

Website: www.crescentpublishingcorp.weebly.com

Illustration by : Shuvankar Bera

Printed at:

Roshan Offset Printers

Delhi

PRINTED IN INDIA



CONTENTS

Acknowledgement	v
Editor's Note	vii
List of Abbreviations and Acronyms	xi
1. Financing Higher Education in India: A Blueprint for NEP-2020	
Md Asraul Hoque, Prof. Krishnan Chalil	1
2. Role of Social Media in the Innovative Education Process	
Souvik Bhatta	17
3. Choice Based Credit System (CBCS): A Study on New Paradigm in Education	
Mufliha Toqua	29
4. Implementation of Credit Based Choice System (CBCS) in Four Years Under Graduation Programme in NEP 2020	
Alak Halder	42
5. Challenges Faced by Secondary School Teachers of West Bengal Board in Implementing Techno-Pedagogy as an Innovative Process in Remote Areas	
Chiranjit Setua	55
6. Importance of Online Education to Develop Study Habits during the Covid-19	
Manasi Maity	67
7. Effective Strategies on using ICT for Teaching and Learning	
Dipanjan Ghosh	74
8. Genius Hour Passion Project: A Journey towards Instigating Research Culture among B.Ed. Trainee Teachers	
Adrija Chattopadhyay	82

9. Emerging Role of ICT in Education System as per Recommendations of NEP 2020
Pramita Mallik Halder 105
10. Benefits of Mobile Learning in Innovative Education
Dr. Sonia Yasmin 121
11. Innovation in Life Learning: Current Situation of the Rural People of Muratipur and Charsarati region after Corona (Covid-19)
Mon Sarkar 131
12. Teaching Methods and Strategies of NEP-2020 for Visually Impaired Learners
Ajit Kumar Singha 147
13. A Balanced Mixture of The Upanishadic Philosophy and The Modern Techniques to Implement New Curriculum for Innovative and Quality Education
Ankita Mukhopadhyay 160
14. Importance of Flipped Classroom in School Education and South 24 Parganas: A Systematic Review
Tanvir Ahmed Mondal, Shrabani Mandal 170
15. Use of Technology in Today's Innovative Higher Education
Shreya Parmanya 181
16. Choice Based Credit System: An Innovative Education Process
Susanta Rajbanshi, Dr. Swati Gupta 193
17. Importance of Educational Technology in fostering Innovative Thinking in Higher Education
Dr. Subrata Ghosh 208
18. The concept of Flipped Classroom as an Innovation in Education in 21st century
Raju Das 222
19. Exploring The Role of Information Communication Technology in the Teaching-Learning Process
Debashis Barman, Sanjay Roy 230
20. Enhancing Education Through Innovation: The Role of Technology and Innovative Teaching Methods
Jayabrata Panda 240

21.	Role of Voice Modulation for Innovative Teaching and Classroom Management Soumya deb Banerjee, Joita Mukherjee	255
22.	Innovative Teaching Methods in the 21st Century Classroom Dipankar Paul	266
23.	ICT as a part of Teacher Education Dr. Subhadip Ghosh	275
24.	Indian Art Since the 1980s: A Journey towards Innovation Kalyan Sundar Gupta	282
25.	Innovations in Teacher Education: An Analytical Study Sonali Paul	289
26.	Role of ICT in the Innovative Teaching Learning of Higher Education Mousumi Manna	300
27.	Significant Role of Media in Value and Peace Education Anwesha Mondal	314
28.	Online Education, the Panacea in the time of Covid-19 and a Modern Apocalypse : Impact of Covid-19 in Indian Education System Sirsha Banerjee	323
29.	Application of Computer Based Education: A Step towards Innovation Labani Gupta	338



Importance of Online Education to Develop Study Habits during the Covid-19

Manasi Maity¹

Abstract

The new crisis has taken us to the big question. How will the complex Indian education system respond to the emerging situation? Avoiding the question is of no use as students are keener than ever. In the absence of a comprehensive action plan, the complex Indian school education system, which is divided by multiple boards of unequal standards and the benefits of technology, will be acquired by a section of teachers and students that can adapt and afford it. In the education sector, the digital transformation has arrived. The Covid lockdown gave a great opportunity to educational institutions at all levels. It also influenced the study habit of the students. The present paper showed how online education helps to develop the study habit of students at the time of COVID-19.

Keywords: Covid-19, Study Habit, Online Education

Introduction

The COVID-19 pandemic has affected educational systems worldwide, leading to the near-total closures of schools, universities and colleges. Most governments around the world have temporarily closed educational institutions in an attempt to contain the spread of COVID-19. As of 4 September 2020, approximately 1.277 billion learners are currently affected due to school closures in response to the pandemic. There is a paradigm shift witnessed in the education sector in India for the last two

months. Schools and teachers have been forced to adapt to e-learning leaving the traditional way of teaching. The adaption of technology was reluctant by many teachers and schools. That new technology added a competitive edge to the e-learning sector. The edu-tech firms strike gold in the pandemic as both private and government schools ensure education through e-platforms. In India, online tutorials including Coursera, Collpoll and many more are gaining immense popularity during this crisis. There is a huge digital divide in urban and rural schools. In a recent survey, over 75 pc of students are impacted due to the lockdown as they found it hard to study online, over 80 pc students said they need hand holding to shift from offline to online and over 25 pc said they need proper training to pursue education through online. Until now, most edu-tech products catered to tier 1 cities and children from the high-income segment, ignoring the majority of students who come from tier 2, 3 cities and rural areas. With more students enrolling from tier 2 and 3 cities, the crisis presents a perfect playground for various companies to modify products, adapt and contextualise them as per the needs of different customers. Firms should therefore utilise this crisis to build the best possible evidence around learning outcomes.

Bharat net is connecting all the villages with a high-speed broadband network. Part of the project connecting remote areas in North-East India is already complete. Ensuring digital connectivity, therefore, may be easier. The 2011 project to distribute cheap 'Akash' tablets to promote e-learning in villages was unsuccessful due to quality and procurement issues. The scheme can be revived in rural areas by the state governments. States like Tamil Nadu have started distributing tabs to students for studies. Technologies because their grasp and the adaptation to anything digital was very, very natural and easy for them. Faculty members had to be trained, and I'm very happy that most of our people adapted to it and improvised on a lot of initiatives that we had undertaken. With the crisis coming, the education institutes were the first ones to be closed.

Review of Related Literature

Gulati, Kamal (2020) Studied reviewed both private and public institutions with universities as a professor and self-instruction

material writer for Information Technology courses. He has many research papers published in National and International Journals and conference proceedings.

Pretty, Rani and Reddy's (2019) study was investigated and carried out with the objectives to examine the gender-related differences and differences across academic majors on achievement motivation among adolescent students. Significant difference was found between the achievement motivation of sciences and arts stream students and achievement motivation among male and female college students.

Nagi, Sampath and Maruthachalam (2017) investigated achievement motivation among college students. The study was carried out on 65 postgraduate students of Bharathiar University from Coimbatore. The research design used for the study is descriptive, which is concerned with the characteristics of a particular individual or a group. The sampling method used was multistage stratified random sampling. The research tool used was Rao Achievement Motivation Scale by Dr Gopal Rao. The study found a significant difference between the achievement motivation of male and female college students.

Sarangi, C (2015) examined the relationship between tribal and rural students' perspectives of academic achievement motivation based on the descriptive Survey Method. In the case of the relationship between achievement motivation and academic achievement, it was observed that there was no significant relation between achievement motivation and academic achievement of tribal, boy and rural students but there was a significant relationship between the achievement motivation and academic achievement of non-tribal, girl and urban students.

Objectives of the Study

The objectives of the present study are as follows:

1. To identify the concept of study habit as a tool for learning.
2. To study the importance of online education to develop study habits during the COVID-19 era.

Concept of Study Habit

Study habits have been defined as the total of all habits of determined purposes and enforced practices that the individual uses to learn. The students must develop special study habits and skills. A well-formed habit furnishes its sources of motivation as such the word 'Study habits' is comprised of two words: 'study' and 'habits'. According to English and English, habit is an acquired act, usually a relatively simple one that is regularly or customarily manifested and study is a relatively protracted application to a topic or problems to learn about the topic. Study habits refer to distance learning students' methods and approach to learning. Study habits refer to the activities carried out by students during the learning process of improving learning. Study habits are intended to elicit and guide one's cognitive processes during learning. According to Patel (1976), study habits include Home environment and planning of work. Reading and note-taking habits planning of subjects. Habits of concentration Preparation for examination General habits and attitudes. School environment Learners, whether they are children in the third grade, pupils in high schools or college students, often give evidence of ineffectual study habits.

Importance of Online Education to Develop Study Habit

1. There is a huge digital divide in urban and rural schools. In a recent survey, over 75 pc of students are impacted due to the lockdown as they found it hard to study online, over 80 pc students said they need hand holding to shift from offline to online and over 25 pc said they need proper training to pursue education through online.
2. The Ed-tech firms will change the way teachers teach and students learn. In place of the traditional brick-and-mortar classroom, schools will witness the rise of 'flipped classrooms' leveraging blended online and offline instructions, where students watch video lectures at home and do their 'homework' in class. It offers a chance to get out of boring classes and offers real-life learning opportunities and diminishes the gap between what is

taught in the classrooms and the real-life workplace requirements.

3. The quality of content is a bigger issue. Providing quality content is a major take for Ed-tech firms. There is no check on the quality of content provided by the platforms to students.
4. The Google Classroom platform was a learning management system for our students, but later on, moved on to a platform called VOLP and have been using it for almost a year before Covid-19 happened. The students were very, very enthused with the implementation of digital technologies because their grasp and adaptation to anything digital were very, very natural and easy for them. Faculty members had to be trained, and I'm very happy that most of our people adapted to it and improvised on a lot of initiatives that we had undertaken.
5. The age of Digital India has arrived and a revolution is already in the making for digital transformation, be it trade, commerce, service, governance or even education everywhere digital transformation is visible. But what is not visible is the emphasis on Integrity, Compassion and Empathy which is Aatmiyata as the "Trinity of Divinity" for organisational effectiveness that governs human behaviour.
6. With the pandemic crisis and the lockdown the situation, the whole world is going through a major economic crisis and NPS International School stepped into the scene with a sustainable 'Forward-Looking ' vision and harnessed and utilized the suite of available technological tools to replicate regular classes and provide continuous effective learning for all our students.
7. Online competitions encompassing domains like Photography, Painting, MUN, etc. were planned and organized. Online Tutorial groups were created to encourage informal interaction between the boys and the

House tutor and to take care of the EQ of the former during these trying times. Boys were also encouraged to join various webinars.

8. A multilateral collaborative approach involving educators, facilitators, parents and students is quintessential during a pandemic. This type of school closure has never been witnessed and so it is imperative to rethink and re-invent teaching pedagogy to blend with the present scenario.
9. A multilateral collaborative approach involving educators, facilitators, parents and students is quintessential during a pandemic. This type of school closure has never been witnessed and so it is imperative to rethink and re-invent teaching pedagogy to blend with the present scenario.
10. Online teaching and learning have been a success in the school right from Kindergarten to Senior Secondary. One and a half months of regular teaching through presentations, videos, flashcards/teaching aids, augmented activities, worksheets and fun sheets has been smooth. Live Online Classes are being conducted not only in Scholastic subjects but also in Co-Scholastic subjects like yoga, music, dance and sports.

Conclusion

Overall, it has been an enriching and novel experience for everyone associated with this process: Parents, Teachers and Students. The Covid-19 lockdown gave a great opportunity to educational institutions at all levels from primary schools to universities and institutions of higher learning to make a rapid shift to digital learning and the interest with which online classes, online workshops, online conferences, online panel discussions and millions of webinars that have been conducted during the time of COVID era that give a clear signal of rapid change in educational space and the role of digital learning shall play to improve the quality and relevance of education from here after.

Online education is adaptable to changes while keeping a positive approach in the recent education system.

References

- Ahluwalia, I. (1985), A Study of Factors Affecting Achievement Motivation. Unpublished Doctoral Thesis, Agra: Agra University.
- Aluede, O.O and Onalomhemhen, P.E. (2001). The Effects of Study Habits Counselling on the Academic Performance of Secondary School Students in English Language. *Journal of Research and Extension*, 38(3), 17-27.
- Aluja & Blench, A. (2004). Socialized Personality Achievement, Exploring the links. *European Journal and Psychological Assessment*, 20 (3), 1-9, retrieved from <http://web.udl.es/usuaris/e7806312/grup/aalujaarchi/arti-arti-aluja/pu-47.pdf>.
- Sharma, Geetika & Vyas. (2016). A review on study habits of school-going children in relation to their academic achievement. *International Journal of Scientific Research in Science and Technology*, 166-169.
- Sarangi, C. (2015). Achievement motivation of the high school students: A case study among different communities of Goalpara district of Assam. *Journal of Education and Practice*, 2-5.
- Shazi, S. (2014). Self-concept, learning styles, study habits and academic achievement of adolescents in Kashmir: A study on Psychological variables and academic achievement of adolescents in Kashmir. *Anchor Academic Publishing*, 103(2), 120-147.
- Uju, F. E. & Paul. (2017). Study habit and its impact on secondary school students' academic performance in biology in the Federal Capital Territory. *Academic Journal*, 583(2), 587.
- Verma, B. P. (1996). Study habits, locus of control and academic performance. *Indian Journal of Psychometry and Education*, 27(1), 1-6.
- Yazdan, K., & Godbole, V. S. (2014). Studying the role of study habits and achievement motivation in improving student's performance. *Journal of Natural and Social Sciences*, 3(4).

Different Dimensions of Art, Culture and Education in Ancient India



Dept. of Education, History & Sanskrit (U.G. & P.G.)
in collaboration with I.Q.A.C.

Sitananda College
Nandigram, Purba Medinipur

Editors

Dr. Bhaswati Mukhopadhyay

Dr. Naba Kumar Das

Dr. Sarita Singh

2023

Book Title: Different Dimensions of Art, Culture and Education in Ancient India
(Peer-reviewed)
Edited by: Dr. Bhaswati Mukhopadhyay, Dr. Naba Kumar Das, Dr. Sarita Singh.
ISBN: 97-93-94449-23-7
Publication: 27th November, 2023

© Sitananda College, Nandigram, Purba Medinipur.

Publisher: Bhaskar Raul
Gangajumuna, Phandar, Belda,
Paschim Medinipur, 721424.

Printed at: Jayanti Printing House, Belda, Paschim Medinipur. 721424

Price: 250/-

Disclaimer: The editors and publisher are in no way responsible for the informations and views expressed by the contributors.

23. অভিজ্ঞানশকুন্তলম্ নাটকে প্রতিফলিত মূল্যবোধ শিক্ষা : একটি বিশ্লেষণাত্মক আলোচনা — পবিত্র ভট্টাচার্য	138
24. শিক্ষা ও শূদ্র : প্রাচীন ভারতীয় শিক্ষাব্যবস্থায় শূদ্রের অবস্থান — পল্লব বৈরাগ্য	142
25. ভারত ও দক্ষিণ-পূর্ব এশিয়ার সাংস্কৃতিক যোগাযোগ : একটি প্রত্নতাত্ত্বিক অনুসন্ধান — পিয়াসী ব্যানার্জী	146
26. মৌর্য যুগের শিল্প ও স্থাপত্য — মোয়াজ্জেম হোসেন	152
27. বৈদিক যুগ থেকে আধুনিক যুগে শিক্ষার প্রকৃতির পরিবর্তন : একটি সমীক্ষা — শম্পা সরকার	158
28. মুক্তদূরস্থশিক্ষায়া: বিকাশে ভারতীয়ানুভব: — অরুণ প্রধান	163
29. সংস্কৃতসাহিত্যে রসস্য স্থানবিষয়ে একা সমীক্ষা — কান্ধন বারিক	169
30. ভারতীয়শিক্ষণপদ্ধত্যাং বৈদিকশিক্ষণপদ্ধত্যা: প্রভাব: — জয়শ্রী পাল	173
31. ড. যতীন্দ্রবিমলচতুর্ধুরীণবিরচিতভারতহৃদয়ারবিন্দে নারীণামবদানম্ — টোটন ভৌমিক	177
32. প্রবোধচন্দ্রোদয়ালোকে মানবমুক্তি: — ড: পূর্ণিমা জানা	184
33. অলংকারনিরূপণে মম্মটবিশ্বনাথমতযো: তুলনামূলক সমীক্ষাত্মকমালোচনম্ — ড: সোনালী মুখোপাধ্যায়া	195
34. বৈদিকজীবনদর্শনে মহায়জ্ঞানং মহত্বম্ — সুলোচন রানা	202

মৌর্য যুগের শিল্প ও স্থাপত্য

মোয়াজ্জেম হোসেন

০সূচনা -

ভারতীয় শিল্প স্থাপত্যের প্রাচীনতম নিদর্শন পাওয়া গেছে হরপ্পায়, এরপর দীর্ঘ সময়, বিশেষ করে মৌর্য যুগের আগের সময় শিল্পকলার তেমন কোন নিদর্শন পাওয়া যায়নি। ব্যতিক্রম ছিল রাজগড় শিল্পগুণ বর্জিত প্রস্তর দেওয়াল। তবে এই সময় শিল্পক্ষেত্রে শূন্যতার জন্য দায়ী ছিল কাঠ, মাটি, গজদাঁত প্রভৃতি ভঙ্গুর উপাদান নির্মিত শিল্প নিদর্শন যা কালের করাদ্বারা ধ্বংস হয়ে গেছে। সরস্বতী, এ.এল. ব্যাসাম প্রমুখ এই শূন্যতার কথা স্বীকার করেছেন। চন্দ্রগুপ্তমৌর্যের নিতরন আরোহণের সাথে সাথে এই শিল্প শূন্যতা পূরণ হতে থাকে এবং অশোকের রাজত্বকালে তা উচ্চ শিখরে পৌঁছায়। এর ফলস্বরূপ ভারত শিল্পে বিশেষ করে স্থাপত্য অলংকরণশিল্প পশ্চিম এশিয়ার সংস্পর্শে চলে আসে। চন্দ্রগুপ্তের রাজত্বকালে আফগানিস্তান ভারতের অধিকারে এলে গ্রিকদের সঙ্গে ভারতের সম্পর্ক মজবুত হয়। চন্দ্রগুপ্ত, বিন্দুসার, অশোকের গ্রিক সংস্কৃতির প্রতি দুর্বলতা ভারতে স্থাপত্যের ভিত্তি তৈরি করে। পারসিকরা সর্বদা সৌন্দর্যের প্রতি অনুরাগী ছিল। যা পারস্যে বিভিন্ন দেশে শ্রেষ্ঠ শিল্পীদের সমন্বয়ে মৌলিক শিল্পশৈলী সৃষ্টিতে সাহায্য করে। মৌর্য যুগে ভারতীয় শাসকদের সঙ্গে গ্রিক শাসকদের ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক হওয়ায়, মৌর্য শিল্প কলাতে বৈদেশিক প্রভাব অনিবার্যভাবে এসে পড়ে। কিন্তু শুধুমাত্র বৈদেশিক শিল্পের অন্ধ অনুকরণ নয় এই শিল্পকলাতে ভারতীয় শিল্প, ধর্ম-সংস্কৃতির ছাপও স্পষ্ট ছিল। একদিকে গ্রীক, পারসিক, মিশরীয় শিল্পের প্রভাব ও অন্যদিকে ভারতীয় শিল্প-সংস্কৃতির ছাপ, এই দুই এর সমন্বয়ে মৌর্যশিল্প স্থাপত্য প্রাচীন ভারতের শিল্পশৈলীর ক্ষেত্রে বিশিষ্ট স্থান পেয়েছে। বিভিন্ন প্রাথমিক উপাদান যেমন মেগাস্থিনিস এর বর্ণনা, কৌটিল্যের বর্ণনা, অশোকের স্তম্ভ এবং পাটলিপুত্রে খনন কার্যের ফলে প্রাপ্ত প্রত্নতাত্ত্বিক নিদর্শন এবং গৌণ উপাদান যেমন পার্সি ব্রাউনের - 'ইন্ডিয়ান আর্কিটেকচার-বুদ্ধিস্ট এণ্ড হিন্দু পিরিয়ড', এ.কে. কুমারস্বামীর লেখা 'হিস্ট্রি অফ ইন্ডিয়ান এণ্ড ইন্দোনেশিয়ান আর্ট', ভি. স্মিথের - 'ফাইন আর্টস ইন ইন্ডিয়া' প্রভৃতি থেকে প্রাপ্ত তথ্য অনুযায়ী মৌর্য শিল্প স্থাপত্যের বিদেশীয় ও দেশীয় প্রভাব বিশ্লেষিত হয়েছে। প্রাপ্ত তথ্য অনুযায়ী মৌর্য শিল্প স্থাপত্যকে দুভাগে ভাগ করা যায় -

১) দরবারী শিল্প ২) লোকশিল্প

১) দরবারী শিল্প - সম্রাট বা রাজকীয় পৃষ্ঠপোষকতায় গড়ে ওঠা শিল্প। পার্সি ব্রাউনের - 'ইন্ডিয়ান আর্কিটেকচার বুদ্ধিস্ট এণ্ড হিন্দু পিরিয়ড' থেকে জানা যায় যে বারাণসী নিকটবর্তী শিল্পগোষ্ঠী গড়ে ওঠে এবং এই শিল্প গোষ্ঠী দ্বারাই দরবারী শিল্পের অধিকাংশ কাজ সম্পন্ন হয়। কারণ এই শিল্প গুণি প্রযুক্তি, বিষয়বস্তু এবং মসৃণতার মধ্যে অনেক সামঞ্জস্যতা দেখা যায়। দরবারী পৃষ্ঠপোষকতায় রাজপ্রাসাদ, স্তম্ভশিল্প, গুহা-বিহার, স্তূপ প্রভৃতি শিল্প গড়ে ওঠে।

♦সহকারী অধ্যাপক, ইতিহাস বিভাগ, স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়, নন্দীগ্রাম।

মৌর্য যুগের শিল্প ও স্থাপত্য

মোয়াজ্জেম হোসেন*

সূচনা -

ভারতীয় শিল্প স্থাপত্যের প্রাচীনতম নিদর্শন পাওয়া গেছে হরপ্পায়, এরপর দীর্ঘ সময়, বিশেষ করে মৌর্য যুগের আগের সময় শিল্পকলার তেমন কোন নিদর্শন পাওয়া যায়নি। ব্যতিক্রম ছিল রাজগৃহে শিল্পগুণ বর্জিত প্রস্তর দেওয়াল। তবে এই সময় শিল্পক্ষেত্রে শূন্যতার জন্য দায়ী ছিল কাঠ, মাটি, গজদন্ত প্রভৃতি ভঙ্গুর উপাদান নির্মিত শিল্প নিদর্শন যা কালের করাতঘাতে ধ্বংস হয়ে গেছে। সরসী কুমার সরস্বতী, এ.এল. ব্যাসাম প্রমুখ এই শূন্যতার কথা স্বীকার করেছেন। চন্দ্রগুপ্তমৌর্যের সিংহাসন আরোহণের সাথে সাথে এই শিল্প শূন্যতা পূরণ হতে থাকে এবং অশোকের রাজত্বকালে তা উচ্চ শিখরে পৌঁছায়। এর ফলস্বরূপ ভারত শিল্পে বিশেষ করে স্থাপত্য অলংকরণশিল্প পশ্চিম এশিয়ার সংস্পর্শে চলে আসে। চন্দ্রগুপ্তের রাজত্বকালে আফগানিস্তান ভারতের অধিকারে এলে গ্রিকদের সঙ্গে ভারতের সম্পর্ক মজবুত হয়। চন্দ্রগুপ্ত, বিন্দুসার, অশোকের গ্রিক সংস্কৃতির প্রতি দুর্বলতা ভারতে শিল্প স্থাপত্যের ভিত্তি তৈরি করে। পারসিকরা সর্বদা সৌন্দর্যের প্রতি অনুরাগী ছিল। যা পারস্যে বিভিন্ন দেশের শ্রেষ্ঠ শিল্পীদের সমন্বয়ে মৌলিক শিল্পশৈলী সৃষ্টিতে সাহায্য করে। মৌর্য যুগে ভারতীয় শাসকদের সঙ্গে গ্রিক শাসকদের ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক হওয়ায়, মৌর্য শিল্প কলাতে বৈদেশিক প্রভাব অনিবার্যভাবে এসে পড়ে, কিন্তু শুধুমাত্র বৈদেশিক শিল্পের অন্ধ অনুকরণ নয় এই শিল্পকলাতে ভারতীয় শিল্প, ধর্ম-সংস্কৃতির ছাপও স্পষ্ট ছিল। একদিকে গ্রীক, পারসিক, মিশরীয় শিল্পের প্রভাব ও অন্যদিকে ভারতীয় শিল্প-সংস্কৃতির ছাপ, এই দুই এর সমন্বয়ে মৌর্যশিল্প স্থাপত্য প্রাচীন ভারতের শিল্পশৈলীর ক্ষেত্রে বিশিষ্ট স্থান পেয়েছে। বিভিন্ন প্রাথমিক উপাদান যেমন মেগাস্থিনিস এর বর্ণনা, কৌটিল্যের বর্ণনা, অশোকের স্তম্ভ এবং পাটলিপুত্রে খনন কার্যের ফলে প্রাপ্ত প্রত্নতাত্ত্বিক নিদর্শন এবং গৌণ উপাদান যেমন পার্সি ব্রাউনের - 'ইন্ডিয়ান আর্কিটেকচার-বুদ্ধিস্ট এণ্ড হিন্দু পিরিয়ড', এ.কে. কুমারস্বামীর লেখা 'হিস্ট্রি অফ ইন্ডিয়ান এণ্ড ইন্দোনেশিয়ান আর্ট', ভি. স্মিথের - 'ফাইন আর্টস ইন ইন্ডিয়া' প্রভৃতি থেকে প্রাপ্ত তথ্য অনুযায়ী মৌর্য শিল্প স্থাপত্যের বিদেশীয় ও দেশীয় প্রভাব বিশ্লেষিত হয়েছে। প্রাপ্ত তথ্য অনুযায়ী মৌর্য শিল্প স্থাপত্যকে দুভাগে ভাগ করা যায় -

১) দরবারী শিল্প ২) লোকশিল্প

১) দরবারী শিল্প - সম্রাট বা রাজকীয় পৃষ্ঠপোষকতায় গড়ে ওঠা শিল্প। পার্সি ব্রাউনের - 'ইন্ডিয়ান আর্কিটেকচার বুদ্ধিস্ট এণ্ড হিন্দু পিরিয়ড' থেকে জানা যায় যে বারাণসী নিকটবর্তী শিল্পগোষ্ঠী গড়ে ওঠে এবং এই শিল্প গোষ্ঠী দ্বারাই দরবারী শিল্পের অধিকাংশ কাজ সম্পন্ন হয়। কারণ এই শিল্প গুলি প্রযুক্তি, বিষয়বস্তু এবং মসৃণতার মধ্যে অনেক সামঞ্জস্যতা দেখা যায়। দরবারী পৃষ্ঠপোষকতায় রাজপ্রাসাদ, স্তম্ভশিল্প, গুহা-বিহার, স্তূপ প্রভৃতি শিল্প গড়ে ওঠে।

♦ সহকারী অধ্যাপক, ইতিহাস বিভাগ, স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়, নন্দীগ্রাম।



ISBN: 978-93-94449-23-7
(Peer-reviewed)



Different Dimensions of Art, Culture and Education in Ancient India



Dept. of Education, History & Sanskrit (U.G. & P.G.)
in collaboration with I.Q.A.C.

Sitananda College
Nandigram, Purba Medinipur

Editors

Dr. Bhaswati Mukhopadhyay
Dr. Naba Kumar Das
Dr. Sarita Singh

2023

11. The Analogy of Ancient & Modern Indian Education System: A Review of the Vedic Education System in Context of the Aristotelian Triad — Tirtha Sarathi Mohapatra	62
12. Perinatal संस्कार-s in Ancient Hindu Tradition — Vrunda Deepak Vichare	70
13. আদি-মধ্যযুগে পশ্চিমবঙ্গের দক্ষিণ-পশ্চিম অঞ্চলের বিশেষতঃ মেদিনীপুরের পুরাকীর্তি: একটি ঐতিহাসিক বিবরণ — আকতাবউদ্দিন শেখ	75
14. জাতীয় শিক্ষানীতি ২০২০: বিদ্যালয় পাঠ্যক্রমে প্রাচীন ভারতীয় ভাষা, শিক্ষা ও সংস্কৃতির সংরক্ষণ ও অগ্রগমন — কার্তিক চন্দ্র ধাড়া ও ড. বামপদ বাউরি	82
15. ভারতের শান্তিশিক্ষা : অতীত থেকে বর্তমান — ড. অভিষেক দাস	88
16. রোহিনীঃ বাংলার নব আবিষ্কৃত ভারত-রোম বাণিজ্য কেন্দ্র — ড. তপন কুমার দাস	94
17. আচার্য বৃহস্পতির নীতিশাস্ত্রের বিশ্লেষণ — ড. দেবব্রত বেরা	99
✓ 18. শ্রীমদ্ভগবদ্গীতার আলোকে কর্মসংস্কৃতি — ড. প্রসাদ রঞ্জন চক্রবর্তী	103
19. কতিপয় নাটক লক্ষণের যুক্ততাবিচার — ড. মণিদীপা দাস	109
20. প্রাচীন ভারতে সুগন্ধি দ্রব্যের ব্যবহার : একটি ঐতিহাসিক পর্যালোচনা — ড. সেখ জাহাঙ্গির হোসেন	124
21. আয়ুর্বেদশাস্ত্রের উপর দর্শনের প্রভাব সমীক্ষা — তরুণ কুমার মাইতি	128
22. বর্তমান সময়ের নিরিখে স্বামী বিবেকানন্দের শিক্ষা-চিন্তার প্রাসঙ্গিকতা — নন্দিতা বারুই	131

শ্রীমদ্ভগবদ্গীতার আলোকে কর্মসংস্কৃতি

ড. প্রসাদ রঞ্জন চক্রবর্তী*

০ প্রবন্ধসার -

মানবজাতি ও সংস্কৃতি পরস্পরের সঙ্গে ওতপ্রোতভাবে জড়িত। সময়কে যদি নদীখাতের সঙ্গে তুলনা করা হয়, তাহলে ঐ খাত দিয়ে সদা বহতা সলিলধারা হল মানবজীবন এবং সংস্কৃতির মিশ্র প্রবাহ। ভাষা, পোশাক-পরিচ্ছদ, চিন্তাভাবনা, কথাবার্তা, আচার-ব্যবহার প্রভৃতির মতো কর্মের মধ্যেও সংস্কৃতি বিদ্যমান। কর্মসংস্কৃতি শব্দটি আমাদের কাছে অত্যন্ত পরিচিত একটি শব্দ। কোনো দেশের বা জাতির উন্নতির সব থেকে গুরুত্বপূর্ণ কারণ হল যথাযথভাবে কর্মসংস্কৃতির পরিপালন। কর্মসংস্কৃতির পরিপালনে শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা আমাদের কিভাবে পথ দেখাতে পারে, সেই বিষয়ের অন্বেষণ এবং পর্যালোচনার্থেই এই প্রবন্ধের নির্মাণ।

শব্দসঙ্কেত - কর্মসংস্কৃতি, শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা, কর্ম।

০ ভূমিকা -

নিরন্তর কর্মহীন কিংবা কর্মবিমুখ থেকে কোনো জাতি বা দেশ নিজেদের উন্নতি সাধন করতে পারে না। সুকর্ম এবং কুকর্ম বা দুষ্কর্ম এই দুই মিলিয়ে কর্মজগৎ। এই দ্বিবিধ কর্মের মধ্যে কর্মসংস্কৃতি কেবল প্রথমটির সঙ্গে যুক্ত। সংস্কৃতিকে একটি জনসংখ্যার শিষ্টাচার, পোশাক, ভাষা, কর্ম, আচার, শিল্পকলা, বিশ্বাস এবং প্রতিষ্ঠান সহ জীবনের সমস্ত উপায় হিসাবে সংজ্ঞায়িত করা যেতে পারে যা প্রজন্ম থেকে প্রজন্মে চলতে থাকে। সংস্কৃতি হল সমগ্র সমাজের জীবনধারা।

কেমব্রিজ ইংরাজী অভিধান বলে যে সংস্কৃতি হল - জীবনের পথ, বিশেষ করে সাধারণ রীতিনীতি এবং বিশ্বাস, একটি নির্দিষ্ট সময়ে একটি নির্দিষ্ট গোষ্ঠীর।^১ উইকিপিডিয়াতে বলা হয়েছে - সংস্কৃতি একটি ছাতা যা মানব সমাজে পাওয়া সামাজিক আচরণ, প্রতিষ্ঠান এবং নিয়মাবলীর পাশাপাশি এই গোষ্ঠীর ব্যক্তিদের জ্ঞান, বিশ্বাস, শিল্পকলা, আইন, রীতিনীতি, ক্ষমতা এবং অভ্যাসকে অন্তর্ভুক্ত করে। মানুষ সংস্কৃতি ও সামাজিকীকরণের শেখার প্রক্রিয়ার মাধ্যমে সংস্কৃতি অর্জন করে, যা সমাজ জুড়ে সংস্কৃতির বৈচিত্র্য দ্বারা প্রদর্শিত হয়।^২ শব্দকোষে বলা হয়েছে - সংস্কৃতি মানুষের একটি বিশেষ গোষ্ঠীর বৈশিষ্ট্য এবং জ্ঞান, ভাষা, ধর্ম, সামাজিক অভ্যাস, সঙ্গীত এবং শিল্পকে অন্তর্ভুক্ত করে।^৩ অতএব, কর্মসংস্কৃতি একটি ছাতার মতো যা কর্ম করার নিয়মিত অভ্যাস, কর্মের নির্দিষ্ট রীতিনীতি, কর্মজ্ঞান, কর্মের প্রতি শ্রদ্ধা বা বিশ্বাস, কর্মক্ষমতা প্রভৃতি বিষয়কে অন্তর্ভুক্ত করে। কোনো একটি জনগোষ্ঠীর সম্পাদিত কর্মের মধ্যে এই বিষয়গুলি বিদ্যমান থাকলে মেনে নেওয়া যায় যে ঐ গোষ্ঠীর মধ্যে কর্মসংস্কৃতি রয়েছে। কর্মসংস্কৃতির নিয়মিত পরিপালনেই হয় প্রতিটি জাতির অভ্যুদয়। এই কর্মসংস্কৃতির প্রবাহ বজায় রাখার জন্য শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা থেকেও আমরা কিছুটা উৎসাহ পেতে পারি।

*সহকারী অধ্যাপক, সংস্কৃত বিভাগ, স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়, নন্দীগ্রাম।

3. অরবিন্দ। গীতা কী ভূমিকা পণ্ডিচেরী : অরবিন্দ সোসাইটি, ১৯৯৯।
 4. আচার্য, কেশবদেব। গীতা-নবনীত (শ্রী অরবিন্দকৃত গীতা প্রবন্ধ কে आधार पर) পণ্ডিচেরী : দিব্য জীবন সাহিত্য প্রকাশন, ১৯৫৫।
 5. আত্মানন্দ, স্বামী। গীতাতত্ত্ব-চিন্তন কোলকাতা, ২০১৫।
 6. উপনিষদ্ (ঈশাদি নৌ উপনিষদ্) গোরক্ষপুর : গীতাপ্রেস, চতুর্দশ পুনর্মুদ্রণ, ২০১৭।
 7. মনুসংহিতা সম্পা. এবং অনু. মানবেন্দু বন্দ্যোপাধ্যায়। দ্বি. সং., কলকাতা : সংস্কৃত পুস্তক ভাণ্ডার, বাং.সা. ১৪১৬।
 8. শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা সম্পা. স্বামী জগদানন্দ, অনু. স্বামী জগদীশ্বরানন্দ। কলকাতা : উদ্বোধন কার্যালয়, পঞ্চাশতম পুনর্মুদ্রণ, ২০১৫।
 9. শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা সম্পা. স্বামী রামসুখদাস। গোরক্ষপুর : পুনর্মুদ্রণ, ২০২২।
 10. শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা সম্পা. স্বামী সুহিতানন্দ। কলকাতা : উদ্বোধন কার্যালয়, তৃতীয় পুনর্মুদ্রণ, ২০২১।
- Culture, Retrieved from -
1. <https://dictionary.cambridge.org/dictionary/english/culture>, Dt. 22,03,2023
 2. <https://en.wikipedia.org/wiki/Culture>, Dt. 22,03,2023
 3. <https://www.shabdkosh.com/dictionary/english-bengali/culture/culture-meaning-in-bengali> Dt. 22.03.2023

ॐ

Dr. Bhaswati Mukhopadhyay: At present she is Head of the Department of History in Sitananda College, Nandigram. Also she is working as a guest faculty in the Dept. of South and Southeast Asian Studies, University of Calcutta. The area of her research interest is Culture of Southeast Asian Countries and interactive relationships between India and her neighboring Southeast Asian Countries. She has contributed more than 15 articles for some edited books and journals and has authored a text book.

Dr. Naba Kumar Das, is Assistant Professor of Department of Sanskrit (U.G. & P.G.) in Sitananda College, Nandigram. He is also working as guest faculty of Department of Sanskrit, Rabindra Bharati University. The areas of his research interest are vedic studies and manuscriptology. Dr. Das has published many research papers in many reputed journals and books.

Dr. Sarita Singh, is Head of the Department of Education, Sitananda College, Nandigram. She has received her Ph.D. degree in Education from IGNTU, M.P. Her area of research interests are Educational Technology, Teacher Education, Psychology of Education and Policy plan making & Evaluation.

Jayanti Prakashan

Gangajamuna, Phandar, Belda
Paschim Medinipur, 721424, West Bengal, India.
Email ID: prakashanjayanti@gmail.com
Contact: 9836413580





A circular inset image showing a statue of Lord Venkateswara in a meditative posture, seated on a lotus pedestal, with a dark, textured background.

Sitananda College
Nandigram, Purba Medinipur

Dr. Bhaswati Mukhopadhyay
Dr. Naba Kumar Das
Dr. Sarita Singh

2023



ISBN: 978-93-94449-23-7
(Peer-reviewed)



Different Dimensions of Art, Culture and Education in Ancient India



Dept. of Education, History & Sanskrit (U.G. & P.G.)
in collaboration with I.Q.A.C.

Sitananda College
Nandigram, Purba Medinipur

Editors

Dr. Bhaswati Mukhopadhyay
Dr. Naba Kumar Das
Dr. Sarita Singh

2023

Book Title: **Different Dimensions of Art, Culture and Education in Ancient India**
(Peer-reviewed)
Edited by: Dr. Bhaswati Mukhopadhyay, Dr. Naba Kumar Das, Dr. Sarita Singh.
ISBN: 97-93-94449-23-7
Publication: 27th November, 2023

© Sitananda College, Nandigram, Purba Medinipur.

Publisher: **Bhaskar Raul**
Gangajumuna, Phandar, Belda,
Paschim Medinipur, 721424.

Printed at: Jayanti Printing House, Belda, Paschim Medinipur. 721424

Price: 250/-

Disclaimer: The editors and publisher are in no way responsible for the informations and views expressed by the contributors.

Contents

	Page
1. Heritage Tourism: A Pathway for Preservation of Ancient Indian Culture — Arpita Majumder	1
2. Mayasura's Mayasabha of the <i>Mahabharata</i>: The Wonder of Architecture of Ancient India — Dr. Ayan Kanti Ghosh	7
3. Study of Ayurveda : The Forgotten History and Principles of an Indian Traditional Healing System with Reference to Midnapore District — Dr. Shib Sankar Ghosh	12
4. Early temple Structure of India — Pronil Das	23
5. Influence of Kalidasa in contemporary days: A critical study of <i>Abhijnana Shakuntalam</i> — Prothoma Saha	28
6. Impact of Buddhism on educational development in ancient India — Raka Das & Dr. Pushpraj Singh	34
7. Societal Stereotyping and Sexual Equality: Understanding Male-Female Equations through the Structural Facets of the 6th-8th century Indian Temple — Rupsha Ghosh	38
8. George Orwell's Dystopian Concept: A Reflection on Vedic Philosophy — Sandip Kumar Kabi	45
9. Ancient Indian Education System: A Comprehensive Study — Sanjit Debnath	50
10. Representation of Gender Line and Social Class in the Arts, Sculpture and Architecture of Khajuraho — Shyam Sundar Mondal	55

11. The Analogy of Ancient & Modern Indian Education System: A Review of the Vedic Education System in Context of the Aristotelian Triad — Tirtha Sarathi Mohapatra	62
12. Perinatal संस्कार-s in Ancient Hindu Tradition — Vrunda Deepak Vichare	70
13. আদি-মধ্যযুগে পশ্চিমবঙ্গের দক্ষিণ-পশ্চিম অঞ্চলের বিশেষতঃ মেদিনীপুরের পুরাকীর্তি: একটি ঐতিহাসিক বিবরণ — আকতারউদ্দিন শেখ	75
14. জাতীয় শিক্ষানীতি ২০২০: বিদ্যালয় পাঠ্যক্রমে প্রাচীন ভারতীয় ভাষা, শিক্ষা ও সংস্কৃতির সংরক্ষণ ও অগ্রগমন — কার্তিক চন্দ্র ধাড়া ও ড. বামপদ বাউরি	82
15. ভারতের শান্তিশিক্ষা : অতীত থেকে বর্তমান — ড. অভিষেক দাস	88
16. রোহিনীঃ বাংলার নব আবিষ্কৃত ভারত-রোম বাণিজ্য কেন্দ্র — ড. তপন কুমার দাস	94
17. আচার্য বৃহস্পতির নীতিশাস্ত্রের বিশ্লেষণ — ড. দেবব্রত বেরা	99
18. শ্রীমদ্ভগবদ্গীতার আলোকে কর্মসংস্কৃতি — ড. প্রসাদ রঞ্জন চক্রবর্তী	103
19. কতিপয় নাটক লক্ষণের যুক্তাবিচার — ড. মণিদীপা দাস	109
20. প্রাচীন ভারতে সুগন্ধি দ্রব্যের ব্যবহার : একটি ঐতিহাসিক পর্যালোচনা — ড. সেখ জাহাঙ্গির হোসেন	124
21. আয়ুর্বেদশাস্ত্রের উপর দর্শনের প্রভাব সমীক্ষা — তরুণ কুমার মাইতি	128
22. বর্তমান সময়ের নিরিখে স্বামী বিবেকানন্দের শিক্ষা-চিন্তার প্রাসঙ্গিকতা — নন্দিতা বারুই	131

23. অভিজ্ঞানশকুন্তলম্ নাটকে প্রতিফলিত মূল্যবোধ শিক্ষা : একটি বিশ্লেষণাত্মক আলোচনা — পবিত্র ভট্টাচার্য	138
24. শিক্ষা ও শূদ্র : প্রাচীন ভারতীয় শিক্ষাব্যবস্থায় শূদ্রের অবস্থান — পল্লব বৈরাগ্য	142
25. ভারত ও দক্ষিণ-পূর্ব এশিয়ার সাংস্কৃতিক যোগাযোগ : একটি প্রত্নতাত্ত্বিক অনুসন্ধান — পিয়াসী ব্যানার্জী	146
26. মৌর্য যুগের শিল্প ও স্থাপত্য — মোয়াজ্জেম হোসেন	152
27. বৈদিক যুগ থেকে আধুনিক যুগে শিক্ষার প্রকৃতির পরিবর্তন : একটি সমীক্ষা — শম্পা সরকার	158
28. মুক্তদূরস্থশিক্ষায়া: বিকাশে ভারতীয়ানুভব: — অরুণ প্রধান	163
29. সংস্কৃতসাহিত্যে রসস্য স্থানবিষয়ে একা সমীক্ষা — কাঞ্চন বারিক	169
30. ভারতীয়শিক্ষণপদ্ধত্যাং বৈদিকশিক্ষণপদ্ধত্যা: প্রভাব: — জয়শ্রী পাল	173
31. ড. যতীন্দ্রবিমলচতুর্ধুরীণবিরচিতভারতহৃদয়ারবিন্দে নারীণামবদানম্ — টোটন ভৌমিক	177
32. প্রবোধচন্দ্রোদয়ালোকে মানবমুক্তি: — ড: পূর্ণিমা জানা	184
33. অলংকারনিরূপণে মম্মটবিশ্বনাথমতযো: তুলনামূলকং সমীক্ষাত্মকমালোচনম্ — ড: সোনালী মুখোপাধ্যায়া	195
34. বৈদিকজীবনদর্শনে মহায়জ্ঞানং মহত্বম্ — সুলোচন রানা	202

Heritage Tourism: A Pathway for Preservation of Ancient Indian Culture

Arpita Majumder♦

◎Abstract:

Ancient Indian Culture made our country incredible with its diverse tangible and intangible culture. India has various aspects of culture like language, religion, food, dress, etc. and it has one of the world's largest collections of architectures, sculptures, paintings, songs, music, dance etc. Ethnic diversity of India has evolved in a variant essence of culture all of which reflect the country's rich cultural past. Preservation of tangible and intangible culture of India is getting a big challenge to our nation. In order to preserve these elements the Ministry of Culture implements a number of schemes. Cultural and heritage tourism is playing a great role to preserve the heritage sites incorporating the stakeholders which also helps in economic development of the area as well as the country.

The architectures of ancient India are the heritage of our country which is the witness of the glorious ancient history of our magnificent country. There are more than 15 ancient cultural heritage sites in India recognised by UNESCO. In this research paper it is tried to focus on the heritage and cultural tourism and its effects on preservation of ancient heritage sites as well as Indian Culture for future to explain the majestic history of ancient India.

Key Words: Culture, Heritage, Architecture, Tourism, Preservation

◎Introduction:

"A nation's culture resides in the hearts and in the soul of it's people."

----- **Mahatma Gandhi**

Every country has its own culture and it also varied in different parts of the country which will exhibits the nation's identity and heritage. "Cultural heritage is the heritage of tangible and intangible heritage assets of a group or society that is inherited from past generations." (Wikipedia) Heritage is taken as history, culture of the land in which people live and it includes both tangible and intangible elements such as historical architectures including monuments, historical sites, battle fields, language, religion, literature, music, art, customs folklore practices, traditional lifestyles like food, drink and sports etc.

♦ Assist. Prof., Dept. of Geography, Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya.

Bengal-British Encounters :

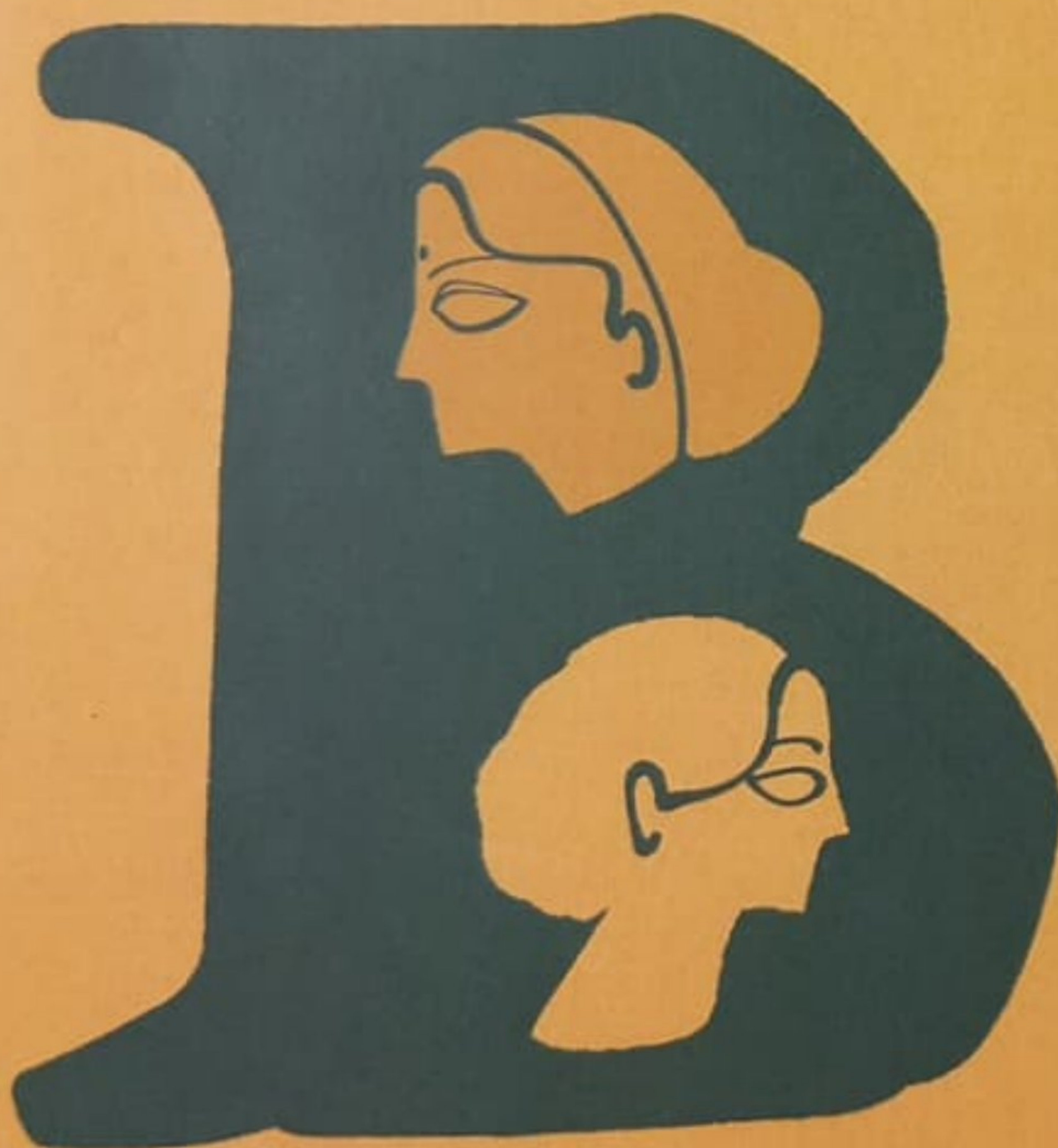
Text, Stage and Screen

Edited by

Aritrik Dutta Chowdhury

Dr. Madhuparna Mukherjee

Dr. Priyanka Shah



Bengal - British Encounters : Text, Stage and Screen

Edited by

**Aritrik Dutta Chowdhury
Dr. Madhuparna Mukherjee
Dr. Priyanka Shah**

Som Publishing

Bengal - British Encounters : Text, Stage and Screen

Edited by
Aritrik Dutta Chowdhury
Dr. Madhuparna Mukherjee
Dr. Priyanka Shah

Published :
7th November, 2023

ISBN : 978-93-87751-86-6

© Acharya Girish Chandra Bose College

Cover Design
Amit Mondal

Published by
SOM PUBLISHING
21, Kanai Dhar Lane , Kolkata 700 012
Ph - 9330843618
Email : *sompublishing16@gmail.com*
In collaboration with
Acharya Girish Chandra Bose College

Printer:
Gouranga Press
23, Kanai Dhar Lane, Kolkata 700012

Price : 449.00

Contents

Section - I (Special Contributors)

ইঙ্গ-বঙ্গ পারস্পরিকতা : সাহিত্য, চলচ্চিত্র ও মঞ্চ	1-14
মৈনাক বন্দ্যোপাধ্যায়	15-27
Bengal-British Encounters in Retro-Victorian Bengali Cinema and the Politics of Historiophoty	28-34
Dr. Sneha Kar Chaudhuri	
“To go on all fours”: Satyajit Ray’s Uncanny Short Stories and Neo- Victorian Gothic Literature	35-45
Subarna Mondal	
Transcultural Transformations: Negotiating Bengal’s Brush with the Bard in <i>Select Cinematic Adaptations (1961-2016)</i>	46-59
Dr. Arindam Ghosh	
Shakespeare: Belonging as much to “Us” as to “Them”	60-62
Tirthankar Sengupta	

Section - II

Treating The Diseased Body : Reading The Colonial Encounter Between British Women Doctors and Indian Women Doctors in India (1860-1947)	63-71
Deepti Myriam Joseph	
Modernity and Life-writing in <i>Ghare Baire</i> and <i>The Home and the World</i>	72-77
Dr. Durba Basu	
The Post-Colonial Self : An Analysis of Nation and Identity in <i>The Home and The World</i>	78-87
Swarnali De	

Modernity and Life-writing in *Ghare Baire* and *The Home and the World*

Dr. Durba Basu

...তার আগের সঙ্গে এ যুগের মাঝখানকার ক্রম যেন নেই। বোধ করি সেইজন্যই নূতন যুগ একেবারে বাঁধ-ভাঙা বন্যার মতো আমাদের ভয়-ভাবনা চোখের পলকে ভাসিয়ে নিয়ে গিয়েছিল। কী হল, কী হবে, তা বোঝার সময় পাই নি।

—ঘরে বাইরে (১৭)

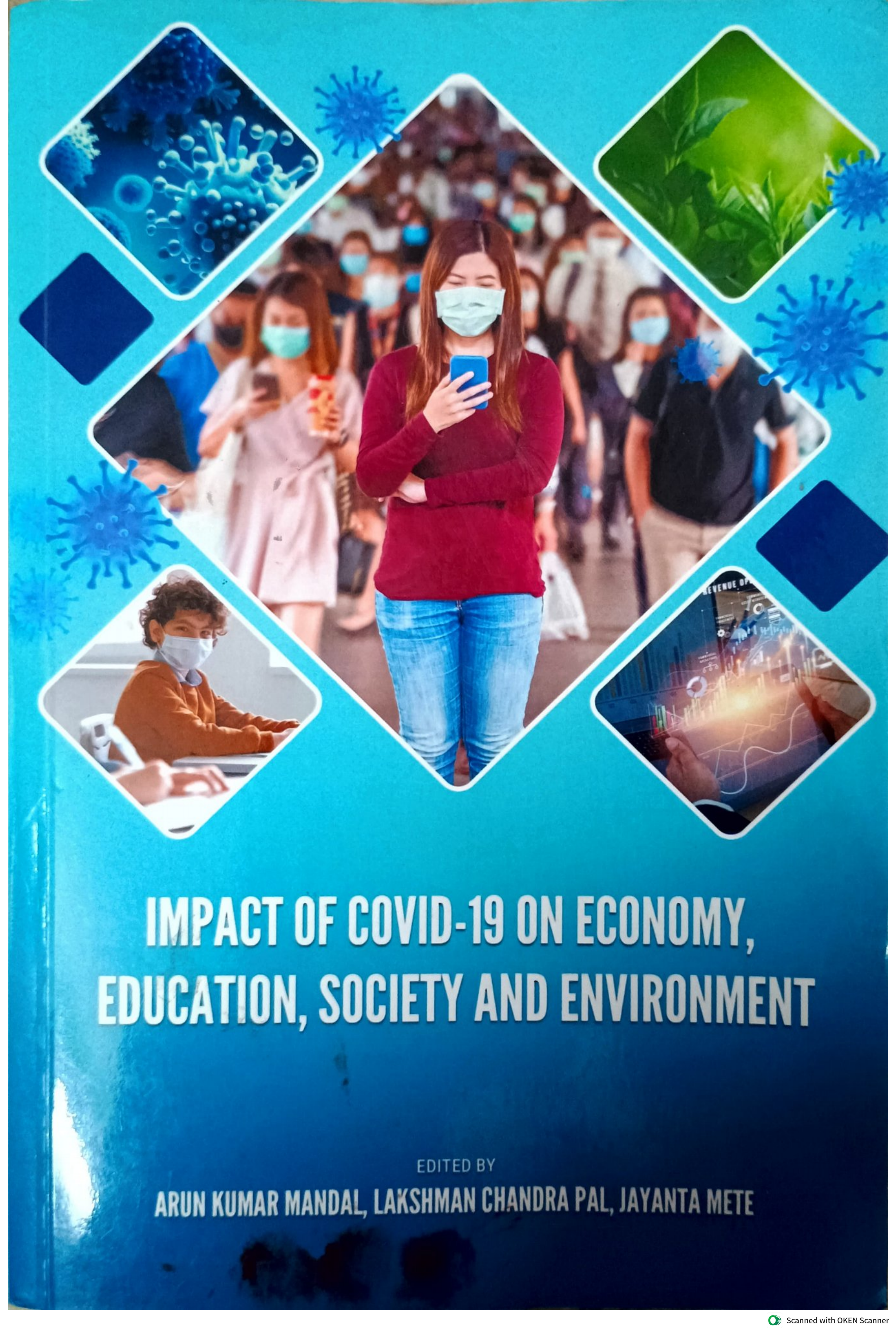
...There was no gradual slope connecting the past with the present. For that reason, I imagine, the new epoch came in like a flood, breaking down the dykes and sweeping all our prudence and fear before it. We had no time even to think about, or understand, what had happened, or what was about to happen.

—*The Home and the World* (26)

...All that is solid melts into air, all that is holy is profaned, and man is at last compelled to face with sober senses, his real conditions of life, and his relations with his kind...

—*The Communist Manifesto* (223)

I take as my point of departure a juxtaposition of epigraphs: the first from Rabindranath's *Ghare Baire* in Bangla (written 1915–16), the second from Surendranath Tagore's English translation of it (1919), and the third from Karl Marx and Friedrich Engels's *The Communist Manifesto* (1848). While Marx and Engels were obviously writing over half a century before the time of the events that Rabindranath's novel is set in, and writing in Europe, what is common to these passages is a reflection on the sudden dissolution of all familiar modes of being, if it may be put that way. In other words, these passages capture, for those who articulate them, the sudden rupture between past and present that the idea of 'modernity' represents. As postcolonial scholarship of the last forty years has revealed, understood in terms of post-Enlightenment projects of emancipation,



IMPACT OF COVID-19 ON ECONOMY, EDUCATION, SOCIETY AND ENVIRONMENT

EDITED BY
ARUN KUMAR MANDAL, LAKSHMAN CHANDRA PAL, JAYANTA METE

REDMAC.se

IMPACT OF COVID-19 ON ECONOMY, EDUCATION, SOCIETY AND ENVIRONMENT

Edited by Arun Kumar Mandal, Lakshman Chandra Pal, Jayanta Mete

—

REDSHINE PUBLICATION

62/5834 Harplingegränd 110, LGH 1103. Älvsjö, 12573

Stockholm, Sweden

Call: +46 761508180

Email: info.redshine.se@europe.com

Website: www.redshine.se

—

Text © *Editors*, 2023

Cover page © RED'MAC, Inc, 2023

—

ISBN: 978-91-89764-58-3

ISBN-10: 91-89764-58-7

DIP: 18.10.9189764587

DOI: 10.25215/9189764587

Price: kr 150

First Edition: December, 2023

—

Alla rättigheter förbehållna. Ingen del av denna publikation får reproduceras eller användas i någon form eller på något sätt - fotografiskt, elektroniskt eller mekaniskt, inklusive fotokopiering, inspelning, bandning eller informationslagring och -hämtningssystem - utan föregående skriftligt tillstånd från författaren och utgivaren.

—

The views expressed by the authors in their articles, reviews etc. in this book are their own. The Editors, Publisher and owner are not responsible for them.

De åsikter som författarna uttrycker i deras artiklar, recensioner i denna bok är deras egna. Redaktörerna, utgivaren och ägaren ansvarar inte för dem.

Printed in Stockholm | Title ID: 9198758225

CHAPTER NO.	CHAPTERS AND AUTHORS	PAGE NO.
13	COVID-19 AND IT'S EFFECT ON PRIMARY EDUCATION SYSTEM Chhatan Mandal	160
14	COVID-19 PANDEMIC IN INDIA: ITS IMPACT ON PEOPLE, ECONOMY AND ENVIRONMENT Aparesh Mondal	166
15	BLENDED EDUCATION AFTER COVID- 19: A SURVEY OF STUDENTS' PERCEPTION TOWARDS THE MODE OF LEARNING Rini Mandal, Jayanta Mete	179
16	COVID-19 PANDEMIC: IMPACT ON HEALTH AND EDUCATION IN INDIA Sarmistha Chowdhury Biswas	194
17	EFFECTS OF COVID-19 PANDEMIC ON THE MENTAL HEALTH AND WELL-BEING OF LEARNERS IN INDIA Kanika Das, Dr. Arpana Singh	203
18	THE IMPACT OF THE COVID-19 PANDEMIC ON MENTAL HEALTH AND WELL-BEING OF PEOPLE: A QUALITATIVE REVIEW Reshmi Sasi	210
19	A GLOBAL PERSPECTIVE OF COVID-19 PANDEMIC ON DIGITAL TECHNOLOGIES IN THE CLASSROOM Dr. Arun Kumar Mandal	221

Chapter 14

COVID-19 PANDEMIC IN INDIA: ITS IMPACT ON PEOPLE, ECONOMY AND ENVIRONMENT

Aparesh Mondal ¹

Introduction:

The COVID-19 pandemic has had a significant impact on India, both in terms of public health and the economy. It is recorded that the cutoff date of September 2021, India had reported over 33 million cases and over 440,000 deaths due to COVID-19, making it one of the worst affected countries in the world.

The pandemic has also had a significant impact on the Indian economy, with many businesses and industries severely affected. Lockdowns and restrictions on movement have led to a decline in economic activity, particularly in the informal sector, and have had a major impact on employment.

The healthcare system has also been severely strained by the pandemic, with shortages of hospital beds, medical equipment, and personnel. The government has taken several steps to address these issues, including increasing the number of hospital beds and oxygen supply, and launching a nationwide vaccination drive.

The pandemic has also highlighted pre-existing social and economic inequalities in India, particularly in terms of access to healthcare and income disparities. The government has announced several relief measures, including cash transfers and food assistance, to support vulnerable populations during the pandemic. Overall, the impact of the COVID-19 pandemic on India has been significant, with the country facing significant challenges in terms of public health, the economy, and social inequality.

¹ Assistant Professor and Head, Dept. of Geography, Swarnamoyee Mahavidyalaya, India

Jogendranath

pedestrian-friendly areas to promote social distancing and outdoor activities.

Overall, the COVID-19 pandemic has had a mixed impact on the environment in India. While the temporary improvement in air and water quality is a positive development, the increase in plastic waste and the disruption of waste management is a cause for concern. The pandemic has highlighted the need for sustainable waste management practices and the need to reduce plastic consumption in India.

Conclusion:

The COVID-19 pandemic had a significant impact on India, with a large number of cases and deaths reported. The country's healthcare system was put under immense pressure as the number of cases and deaths continued to rise, but the government and healthcare workers worked tirelessly to provide medical care to patients.

The situation in India with COVID-19 is constantly changing, and it's important to stay up-to-date with the latest information and guidelines from the government and healthcare authorities. Vaccines have been shown to be effective in reducing the risk of severe illness and death due to COVID-19, and it's important for eligible individuals to get vaccinated as soon as possible.

As the pandemic continues to evolve, it's crucial to continue practicing measures to prevent the spread of the virus, such as wearing masks, practicing social distancing, and washing hands frequently. Together, we can work towards controlling the spread of COVID-19 and protecting ourselves and our communities.

References:

- De, J. S., Shukla, R. (2021). An analysis of privacy policies of public COVID-19 apps: Evidence from India. *Journal of Public Affairs*, 22(S1), 312-323.
- Mitra, A., Chadhuri, T. R., Mitra, A., Pramanick, P. & Zaman, S. (2020.) Impact of COVID-19 related shutdown on atmospheric carbon dioxide level in the city of Kolkata. *Parana Journal of Science and Education*. 6(3), 84-92.